



# जूना जीवता चितराम

लेखक

मुरलीधर व्यास  
मोहनलाल पुरोहित

प्रकाशक

राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम)  
उदयपुर

प्रकाशक  
राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम)  
उदयपुर

---

प्रथम वार

---

मूल्य - ३ रु. ७५ पैसे  
सन् १९६०

मुद्रक  
अजन्ता प्रिन्टर्स  
जयपुर

थांरी वस्तु भेट, थानै है वल्लभ-प्रभु ।  
है तौ आ अळसेट, लाज ताहरै विड़द री ॥

—लेखक—



## विषय सूची

				पृष्ठ
१	भौल्लौ घड़ा नाखणियौ	...	...	१
२	हुसेनौ गूजर	...	...	४
२	सुखौ वारीदार	३६	७	८
४	रमजान न्यारियौ	३७	३६	११
५	सुगनौ वहीभाट	...	...	१४
६	भीखौ भठियारौ	...	..	१७
७	कावली नसीरुद्दीन	...	...	२०
८	अलखियौ	...	...	२३
९	रामलौ भंगी	...	...	२६
१०	बिरघु सेयग	...	...	२९
११	रुधौ खल्ला गांठणियौ	...	...	३२
१२	श्रीगोपाल ओम्ना	...	...	३६
१३	सिरदार रंगारौ	...	...	३९
१४	गनी ठठारौ	...	...	४४
१५	मध्यौ फेरीवालौ	...	...	४६
१६	भीलियौ खवास	...	...	४९
१७	हरदास दहीवालौ	...	...	५२
१८	भोलियौ डाकोत	...	...	५५
१९	सीत की मालण	...	...	५८
२०	नंदी ओझ	...	...	६१
२१	जेसियौ तंबोळी	...	...	६४

२२	मनजी मचकांवाळी	...	...	६५
२३	पौरायतणी-मदियैरी बहू	...	...	७३
२४	बीजी खाती	...	...	७६
२५	सिणगारी सैं सण	...	...	७५
२६	बाली साभी	...	...	५१
२७	तेजी सोनार	...	...	५३
२८	उभौ दरजी	...	...	५५
२९	पंखैवाळी	...	...	६०

---

# ओख खाण

इसी देखणें में आवै है के मिनख जूनी बातां नै सुणन-गुणन में मोकळी रस लैवै है। वी, लारली बातां नै घणै उद्दाव-अर-उमंग सूं सुणै, तोलै-भोलै, जाचै-परखै अर हणै री नवी बातां सूं मिलान करै। भणिया-अण भणिया सगळै इणी मारग वै वै।

इतिहास, काण्यां-किसा अर लोक-साहित नै, पढ़ण-सुणन री चाव घण खरौ-इणीज कारण सूं हुवै।

इणी चाव नै पूरौ करण सारू, म्हां भी 'जूना जीवता जागता चितराम' लिखिया है। इणां रै पढ़ण सूं मोकळी नवी चिमतकारी और हितरी-बातां आपरै जाणने में आसी-अर-आसी-आपरे आख्यां रै अगाडी समाज रै जूनै वंवेज-वंधाण री सोवणौ चितराम।

इण छोटी सी पोथी सूं आपनै इत्ती जाणकारी तौ मिळ सी ईज—

(१) श्रम री पूजा

(२) आप आपरी जागा सगळां री माण-काण

(३) भाई चारै, मेळ अर सैयोग री भावना

(४) आप-भापरै धंधै में सगळै चतर

(५) गुणां री कदर

(६) त्याग, विसवास, अर भगती री भावना

(७) जाति रै भेदभाव नै भूल'र सागळे धुळिया-रसिया-वसिया

(८) जूनी रीत रवाज

(९) भांत-भांत रा धंधा भांत-भांत रा मिनख

आ पोथी आप लोगां रै घणी दाय आवणी जोथीजें, इसी म्हांरी धारणा है। आपरी दाय-अर सरावण सूं ईज म्हारौ हाय बधसी।

वीकानेर

राखी पूनम, संवत् २०१७

मु. घ. व्यास

मो. ला. पुरोहित



## प्रकाशकीय

“जूनां जीवता चितराम” राजस्थान के लोक-जीवन के कुछ प्राचीन लेकिन ज्वलंत सहज संस्मरणात्मक रेखा चित्र हैं जिनमें राजस्थान के समाज, संस्कृति, तथा आंचलिक जीवन के अनेक पृष्ठ मुखरित हुए हैं। अचल की धरती की धड़कन के वास्तविक बोल अंचल की भाषा में ही अपनी सफल अभिव्यक्ति प्राप्त करते हैं, प्रस्तुत रेखा-चित्र इसके प्रमाण हैं।

सरल और प्रांजल भाषा चित्रित राजस्थानी जीवन के यह अनेक पात्र मानव जीवन की अनेक विशिष्टताओं के प्रतीक हैं। साथ ही पुस्तक के इन चितरे लेखकों की भी स्रजन सामर्थ्य का परिचय देते हैं।

राजस्थानी भाषा में रचित श्रेष्ठ साहित्य के प्रकाशन की योजना के अंतर्गत साहित्य अकादमी के राजस्थानी विभाग ने “जूना जीवता चितराम” को प्रकाशित करने का निर्णय लिया था। प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन विभाग के उसी निर्णय की क्रियान्विति है।

मात्र पद्य में ही नहीं, गद्य के क्षेत्र में भी राजस्थानी साहित्य सिद्धि के नये क्षितिज छू रहा है। गद्य की अनेक विधाओं में आज नितनई श्रेष्ठ कृतियां प्रकाश में आती जा रही हैं, और उसी परम्परा में, राजस्थानी के पाठकों के लिये प्रस्तुत है यह ‘जूनां जीवता चितराम’।

शांतिलाल भारद्वाज ‘राकेश’  
कार्यवाहक निदेशक  
राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम)  
उदयपुर (राजस्थान)

## भोलौ घड़ा नाखणियाँ

मरू भोम । करड़ी रूत । जनी-जानी बेकळूरा धोरा । उनाळें में तपै  
नो इसो तपै कै मत पूछी बात । इयां सू चिप'र वैवती हवा खीरा उद्धाळें ।  
ऊपर सू सूरज भगवान लाय बरसावै नीचै जमीं माता इसी तपै-इसी तपै कै  
उभराणै वैवां तो फाला उपड़ जावै ।

असवाड़ा-पसवाड़ा सैन तपै । आंगण तपै, भीत्यां तपै, वासण तपै,  
बिद्धाणा तपै अर तपै पैरण रा गाभा । रोहं में गूंगा-भोळा जिनावर तपै ।  
तपतै रै मारिया आकळ-आकळ हुयोडा छेंया तकै तिसां भरता तड़भड़ीजै ।  
अठीनै-उठीनै पाणी री वगां डभका मारै ।

मरू-भोम में एक तो पाणी री इयां ई तोड़ी फेर उनाळें में तो मत  
पूछी बात । कृवा साठीका ऊंडां पाणी बळधां सू काढ़ीजै । कृवै माथै इत्ती भीड़  
कै माथै सू माथा टकरावै अर घडां सू घडा । पाणी ले जायणा खातर सै  
ऊंताबळा । बारी मोरीजियोनी कै कफाकफ पाणी ढोईजण लागीनी । पखालिया  
न्यारा ई राफड़ घालै । जंगी-जवर तिरिया-भिरिया भरियोडा कोठा देखतै-  
देखतै खाली हुय जावै । बी देखै हूं पैला तो बी देखै हूं, तूं चाल हूं आयो ।

कदेई जोर री लूवां चालै । कदेई घम घमीजै । परसीणै रा परणाळा  
वैवै । मिंट-मिंट छेड़ै तिस लागै ।

काळें उनाळें में पाणी बिना घडी एक सरै नहीं । खांधें उखण'र लावै  
तोई धीपरवारवाळां रै सरै नहीं । लाई काम काजियां नै तो बेळा-बखत ई  
लाधै नहीं । टावर ढोय-ढोय'र कित्तौ क ढोवै । जणै घड़ा नाखणियां अर  
पखालियां रै मूंडा सामी जोवणो पड़ै ।

पखालियां रा मुर चढियोड़ा । पैला तां बतलायां आरै ई नहीं करै अर  
निवाजै तो बोलता ई पाधरा आशाना-चाराना पखाल मांगै । वाका फाड़ै ।

कदेई इसी बडावडी बाजे जिक्के हिडक्यां रे हाथ लगायां ई रुपियी पखाल हाथ नई आवै ।

जएँ घड़ा नाखणियां री बण आवै । खुल्ला घड़ा नखावै ती आडै दिन दो टका ती अंबळी वेळा एकानी । नवी बंधी पैली ती करण ने आरे ई को होवैनी जे हांकारो भरै ती नखरा-चखरां सूं । जूनी बंधीवाळां रे ई जोथीजती पाणी नाखदेवै ती बडी बात ।

पण पांचै आंगळ्यां एक सिरस्ती को होवैनी । कोई-कोई घडावाळा भला ई होवै । वानै माण-मुलायजो मारे । पल्ले धरम राखे । पइसा देवता कई नै फोडो घालै नहीं-तरसावै नहीं ।

भोळो इसीई एक घड़ा नाखणियो हौ ।

भोळो म्हांरी गळी अर चौक रे घरां में बरसां सूं पाणी नाखतो हौ । कदेई फोडा को घालतो ही नी । आपरै मते ई माटा-मटक्यां अर कंडया भरै राखतो । मिठ बोली माण-मुलायजैवाळीं अर खरो हौ ।

बंधी में रुपियै रा ३२ घड़ा नाखतो । खुल्ला घड़ा रुण माफक पण बीजा सं थोड़ा सस्ता ।

भोळो भोळो अर भलो मिनख हौ ।

भणियोडो भोळो आखर ई को हीनी । घडी नाखतो जएँ पणीई अथवा आंगण री भीत माथे कोयले सूं एक लीख मांड देवती । इण तरे जित्ता घड़ा दिन भर में नाखतो उती ई लीख्यां मांड देवती । महीने में हेंसाब होंवती । लीख्यां गिणीज'र ३२ रे भाव सूं दाम फळाईज जांवता । वो कदेई हेंसाब में गोळ घालतो को हीनी । कदेई बोटी लीख्यां को काडती हीनी ।

भोळो खरो हेंसाबियो हौ ।

चारै महीना में भोळो नै बंधीवाळां घरां सूं एक-एक घोती जोडो मिळती । अर मिळती जीमण-जूठण होंवती जएँ जीमण री नैती ।

भोर री टंडी वेळा भोळी घड़ा नाखण सुरू करती जिक्के री १०११-११ ताई इधारी देवती । पळे माळा-मणियां फेर'र पेट पूजा करती ।

दुपारै री आराम करतो । पाछो तीजै पौर १-४॥ बजी घड़ी लेयर कूधै पूग जांवतो । सिज्या री ८-८॥ बजी ताई एकदाण बैवतौ ।

भोळी मैनती हौ ।

बधीवाळा कदैई पइसा देयण में मोंड़ी कर देंवतौ, ताई बी चीचा को करती हौनी । विना कयै ई ताजै पाणी री मटक्यां-चाडा छाण देंवतौ । वासी ठंडै पाणी री मटकी न्यारी भर'र मेल देंवतौ ।

भोळी जीरणावाळौ हौ ।

वरसां सूं घर में आवण-जावण सूं भोळी परायी को लखाईजतौ हौ नी । सगळां सं पूरौ हिळमिळग्यौ हौ ।

लुगायां बासण-कूसण मांजती अर सिनान-संपाडौ करती बेला गैणौ खोल'र भूल जांवती, ती भोळी, हेली मार'र कैय देंवतौ-माजी ! औ गैणौ कै री है, संभाळ लौ ।

भोळी मेळू अर हाथ री साचौ हौ ।

भोळै री ठिंगणौ खामण हौ, बडी आंख्यां, गोरौ सरीर, करड-काबरा केस, छोटी मूछयां, फानटिरियोडा जिकां में मुरक्यां पैरियोड़ी, टाट पडियोड़ी, डील ऊपर बंडौ, खांधै अंगोछी गोडा सांईनौ ऊंचौ-ऊंचौ धोतियो अर उभराणै पगां रेंवतौ ।

आज वां बातां नै मोकळा बरस हुयग्या । भोळी परलोक सिधारग्यौ, पण बैरौ भोळौ उणियारी अर खराई-भलाई री छाप हिंवडै में हाल मंडी पड़ी है ।

## हुसेनौ गूजर

हुसेनौ भांभर कै री ४-४॥ बजी उठतौ । दिसा-फरागत सू निमट'र,  
गायां नै चाटौ चटाघ'र, दूवण लागतौ । दस-चारै गायां ही, सैं खरणै-वाळी  
अर लंबै थणां धाळी । दोय ही भूरी भैसां । दूध रा, चरा रा चरा भरीज  
जांवता ।

पछै वजू करण लागतौ । सूरज भगवान रै उदै होवण सू पैलाई बी  
नमाज पढ़लेतौ । पछै थोड़ी देर ताई तसबी लेय'र अल्ला-अल्ला करतौ ।  
घर में लोवान खेतौ ।

दिन चढियां परचूणिया अर थोक दूध लेवणिया आय दृकता । कंदोयां  
रै निन रौ दूध जोयीजै, सेराबंधी । वे ई आय धमकता । पाड़ोसी ई भेळा हुय  
जांवता । दूध रौ भाव निकळतौ । पछै हुसेन रै घरवाळा कंदोयां अर थोक  
दूध लेवणियां रै घरै चरा भर'र दूध पूगांवता ।

हुसेनौ गूजर हौ ।

हुसेनै री, घर री लुगार्या ई बैंगी उठती । हुसेनै नै दूवारी में मदत  
देवती । घर री चासी फूस चारी करती । गायां नै नीरती ठाण साफ करती अर  
फोटा थापती । काई लागती घम्मड़-घम्मड़ आटौ पीसण ।

घर में संप हौ । सगळे एक डोरे मै बंधियोडा हा । बडां-बूढां री इग्या  
में चाळणिया हा । हुसेनौ अर उण री वहू घर मै बडा हा ।

हुसेनौ घर री मुखिया हौ ।

घर सू दोय कोस छेई एक बडी तलाव ही-बड़सीसर । जिठै रोही में,  
चरण लायक चून्दा अर तलाव में पाणी रेंवतौ हुसेनै री गायां-भैस्यां ई उठै  
दाणी में रेंवतौ । परवार रा दोय-तीन जणां नै उठै रेंवणो पड़तौ । दिनुगै रौ

हुसेनौ गूजर ]

वैगौ दूयोड़ै दूध रा भरियोडा चरा, ढांचां ऊपर मेल'र, गधां ऊपर दोय'र, सैर मैं वेचण सारू लावणा पड़ता । हुसेनैं रै ३-४ गधा ई हा । गायां, भैंस्यां अर गधां-इण तरै मोकळा जिनावर हा ।

हुसेनौ चांपैवाळीं ही ।

हुसेनौ तीन बखत री नमाज पढ़ती । रोजा राखती । खैरात देंवती । चौथाई तीं को काढ़ती हौनी पण गरीब-गुरबां री मदत करती । सभाव री भली, दयावान अर चित्त री औलोदीलीं ही । जिनावरां नै खूब सोरा राखतीं हौं । आप अर बहू मक्कै-मदीनै सरीफ री जातरा कर आया हा ।

हुसेनौ हाजी हौं ।

एक तीं मेळू बीजी भलीं, तीजी डंभक अर चौधौ धरमातमा होवण सं, जात-विरादरी मैं वैरी चोखी माण-काण हौ वैरी बहू ई बॅरै ओड़ै जोड़ै ही । जात-विरादरी मैं, असरचौपड़ जांवती जणै आंवता सगळे हुसेनै नै तेड़ीं । हुसेनौ, आपरी भली अर तीखी सूभ-चूभ सं, अळंजो सुलभाय देंवतीं ।

हुसेनौ पंच ही ।

जिनावरां री दूवारी दिन मैं दोय चार होंवती ही । एक भोर री बैंगी टैम अर बीजी तीजै पौर री कोई ४-४॥ बजी । रात री १० बजी ताई हुसेनौ गायकां री वाट जांवती । पछै बंचियोड़ै दूध रौ माथो बणाय नांखती । माथो बीजै दिन कंदोई अर जीमण-जूठणवाला खुसी-खुसी ले जांवता परा । केई नकद पइसा देय जांवता तीं केई ओधार-घाट । हुसेनौ आवणियां नै राजी कर'र सवदौ पटाय ई लेंवतीं । आ वात काहीनी कै, वौ, माल डूवती आसाम्थ्यां नै तोल देवै । बै बरस साटां नैडा लिया हा अर केस तावड़ै मैं धौळा को किया हा नी । मिनख री आंख अर चाल ढाल देख'र वैरा लक्खण औ लख लेंवती ही ।

हुसेनौ दानौ-सैणौ घोपारी हौं ।

वामणां अर बाणियां रै सावै मावै दूध अर मावै री मोकळी खपत होंवती । मिंदरा मैं ई दूध जांवतीं । गूजर किसान बीजा को हानी, पण लोक

हुसेनै सुं ईज घणा धीजता-पतीजता । धीजा, खोटौ माल ई चलाय देवता । पण हुसेनो इयां कदेई को करतो ही नी । धीजा तोल में ई मारण री चेत्ता करता पण हाजी बाबो कूड-कपट को बापरतो ही नी । कदास हुसेनै रै दूध सुं, काम नहीं चलतो तो लोक उगरी ई मारफत धीजां गूजरां सं लंबता । जिण सं वे तोल-मोल में ठगार्थे नहीं ।

हुसेनो खातरी अरईमानवाळो हों ।

एक बात धीजी ई ही । कोई उणने आय'र लाचारी सुं कैवतौ-हुसेना बाबा ! छोरै-ओरी रौ व्यांच है, पइससड़ा खने थोड़ा ई है, दूध-मावो तो थानै देवणो ई पइसी । कई पइसा देय देसुं कई ओधार राखणी पइसी । जणै बाबो धीरज-ढाढस वंधाय'र कैवतौ-थारै जोईजै जित्तो दूध मावो ले जायीजे । पइसा हॉळै-सुस्ते देय दिये । देख भाई ! म्हारा पग मती तोडाये धरम पल्लै राखे । खरी नीवतवाळै, नै काई माल री कमी है, भोळा !

हुसेनो पर उपगारी हो ।

पितर मेळै, औसर, बारिचै, सिराध-झमझरी माथे हुसेनै रौ चोखो माल बिकतो । हुसेनो धीजां गूजरां रौ दूध-मावो लेव'र आपरी मारफत वेच देवतो । सेठ-साहूकारां में वैरी आछी धीज-पतीज ही । इयां तो वैरो ई, गाडो घणो सोरो गुडकतो रेंवतो ही । कदेई ओधार अटक जांवतो अर थोक घास-कूस, नीरो-चारो, गवार अर धान ओण लेवणो पइतो जणै पइसां री जरुरत पइती इण मौके माथे धो सेठां-साहूकारां नै जाचतो । हुसेनै री इमानदारी, मेळ अर भलाई सं, कोई ना करणी तो आधोरयो, होठ रै फुरकारे सागे जोईजती जित्तो रकम तोल देवतो । उण रौ बापार ई चोखो चलतो ही ।

हुसेनो आछी साख-सोभावाळो ही ।

हुसेनै री टिंगणो खामणो हों, बडी-बडी आंख्यां, जाडा भंवारा, रेजी रौ चोळा अर रेजी री जाडी धोतियो गोडां साईनां, अध पक्का केस, मूध्यां नाक नीचे घणी ओछी अर हीठां रै किनारें तीखी, दादी च्यार-

च्यार आंगळ री, हाथ में डांग, गळी में रंगदार आंगूठी, माथे पागड़ी गट्टी फेंटीं अर पगां में देसी जाडा जूत हा ।

हुसेनौ दसकत कर देवण जिचौ ई भणियोठी ही । मोकळी चौपार करती, कड़े खने चौपनिथे में अटकवाग लेंवती । सिमरती ई बेरी पक्की ही । सगळी घात जाणे जीव उपर मंडी रेंवती । कणैई पृछलों, हुसेनौ भड्काक मूंडे हेंसाव वताय देवती । वै रें हेंसाव में कदेई गोळ पड़ती को हीनी ।

हुसेनौ हेंसाभियो ही ।

कैवत है-अठे जोयीजे जिकीई उठे जोयीजे । अवे वने वूढापे आय घेरियो ई । आंख्यां री सोजी घणी ओछी पड़गी । खाली भाखी पड़ती, अवेतो अडवी-असरचौ होवण सूं खांधो भाल'र हुसेनौ घर सूं चार निकळती । सरीर री सगती घणी ओछी पड़गी । सारो दिन घर-गुवाड़ में बैठे रेंवती । माथे माथे बैठे अल्ला-अल्ला करती रेंवती । छोरा सेवा करता । घर में हालई बेरी कयो होवती ही । घर-कुद्व अर लैण-देण सूं ई घणौ सोते ही ।

द्वेकड़ अल्ला री दरगा री तेडो आयो । पछे खळखळी तगाटी आयो । अवे हुसेनौजी श्री चाल्या; च्यार जणा री चौकड़ी माथे, आपरी खसबो खिडाअर ।

बरस बीतग्या पण जस को बीतियेनी । बेरी गुणांरी खसबो सूं हाल लोक मोयीजियोडा है । मोकै-टोकै तो हाजी हुसेनै रौ घाटी अखरे ई नही-घणी अखरे । पण जोर क्या बटे जद भगवान जिलम-मरण री जोडी-रच दियो ।



## सुखी वारीदार

सुखी वारै रौ रंग सांघळी, आख्यां बडी, बडी मूळयां, चवडी धौळी वाड़ी, धौळा-करडा केस, चेरै माथै करडार् अर अणभौ, आंख्या रे नीचै लंबी रेखावां, करडी चामडी अर गंठीजियोड्डीं सरीर हाथ लक्कड-भांत अर छुरियै दाई, जाडा भंवारा, काठो गोडा साइनौ धोनियो, डील खाखडियै दाई, सिग दाई गरजना करती, कूवै माथे वैठौ रैवती अर सगळी वातां री निगराणी राखतौ । अंधर साठां नैडी पण कडक इसी जिको मोटियांरां नै छेडै वैठावै ।

वो कूवै माथे रौळ-राड करणियां जिकर करणियां, फालतू पाणी दोळणियां, नागाई-नकटाई करणियां नै, इसी दाकल देंवती जिको वारो काळजौ गिरै छोड देंवती । आगे सं फेर कुचमाद करण री हीमत को होवती नी ।

सुखी वारो कूवै रौ वारीदार हो ।

कूवा साठी का-घणा ऊंडा । घणखरा पोकरणां वामणां रा ।

पाणी बळधां सं वाढीजे । वारो, भायसै री वरत मूं कूवै में टेरीजे अर पाछो बळधां सं खांचीजे । वारो, कूवै रै मूडै माथे पूगे जणे वारो मोरणियो जोर मूं रागोलिया करै-आयो रे भेरियो आयो । सुण'र खीली काढणियां, वरत री खीली काढे । हमें तो वरत रीस भरियोडी सरपणी दाई, सरडाटै मूं कूवै पासी दौडै । वारो मोरणियो पग में पेरियोडे गेटर मूं वरत नै कूवै खने पूगतेई दवाय लेवै । वलध घेने उठे मूं पाछी खांच'र मारण रे नाके पूगे ।

खोली काढणियो अर वारामोरणियो, दिन भर में चोखा पट्ट्या कमाय लेवै ।

कूवै माथे खाल रा डोल अर डोलयां पडी रैवती जिण मूं कोट्टे पाणी पीयो अर हाथ-भंडा धोवो ।

भैंस री खाल रा टुकड़ा-सळू कोठै में भीजता रँवता । चिलमियां सारू एक खानी छाणा, धुखता रँवता ।

सुखलौ बाबो जूनो अर जाणीकार हौ ।

कूबै रै पसवाडळी डायी-जीवणी कूंड्यां घड़ा भरणवाळां वास्ता भरी रँवती । कूंड्यां रै एड़ैछेड़ै दोय जवर चंवडा ऊंडा कोठा तिरिया-भिरिया, पखालियां सारू भरिया रँवता ।

सुखलौ बाबो घडै अर मटकी रौ कचचौ पइसौ अर पखाल रौ एकानो भराई लेंवती । लोग लोभ में आय'र बेघड़िया लांवता अर पिण्यार मटकी माथै, दूणियाँ-गूणियाँ अधवा चाडौ भर'र मेलती, जणै बाबो कँवतौ-क्यों धरम पल्लै राखीनी रे । खाली लोभ रै मारिया भारां मरौ, कूंडी तौ दोवण सू रया ।

बाबो सगळां सू नगदी पइसा हाथो-हाथ लेंवती । कई री ओधार करती तौ टावै-उधै री । गोळ घालणियां अर गिचळ्यां ग्वाणिया री दाळ बावै आगै गळती का हीनी ।

सुखलौ बाबो डाठीक अर हँसात्रियो हौ ।

गायां-डांढां सारू चवडी ऊंडी कूंड्या भरी रँवती । पंखेरुवां सारू कूंडा-ठीकरां में पाणी भरियो रँवती । गरीब-गुरबां नै बाबो मुफत में पाणी ले जावण देंवती ।

कूबै माथै कई नै न्हावण-धोवण री मनाई का हीनी । भलां ई निमट'र जांवती बेळा बालटी-गूणियो भर ले जावौ ।

सुखलौ बाबो धरमात्मा हौ ।

छोड़ होंवती जणै तौ बाबो घरे रोटी खाय आंवती अर भीड़ होंवती जणै उठै ई मंगाय लेंवती ।

कणै ई काम रै मारियां फेट खावण नै ई पुत्रसत का मिळती हीनी । भांभरकैरी ४-१॥ वजी कूबो जोड़ती जिकैरी धू दुपारै री १२॥-१ वजी

कूबै छोड़तौ । मसां सू दो-अढाई घंटा आप'र बळधां नै सास खावण नै मिळती ।

सुखौ बाबू करडौ खाटणियो ही ।

घडा अर पखालां भराई रे हेंसात्र में बाबू कदेई भौड़ घालतो को ही नी । पण आई कोहीनी कै बाबै री आंख्यां में कोई धूड़ घाल जावै ।

बरस भर में सुखौ बाबू रे निखरची चोखी कमाई हुय जांवती ही । जात-न्यात में ई उणरो बडौ काण-कायदौ ही ।

सुखै बाबै नै कूबै रे मालकां नै एक वंधी रकम २५०) ३००) देवणी पड़ती ही । मालकां रे घरे ३०-३५ घडा पूगावणा पड़ता हा । मालकां नै छूट ही कै चाबै जित्तौ पाणी खांधै डोय ले जावौ । कदास मालक पखाल सू पाणी मंगांवता तौ वानै खाली ढोवाई लागती । ढोवाई वै वेळा एकानौ पखाल ही । घडां सू पाणी मंगांवता तौ जित्ता घड़ा, घड़ा-नाखणियो नाम्बतौ, बडलै में, उता ई घडा वैनै ढोवाई रे बडले में मुफ्त भरण दिया जांवता ।

मालकां रे मिंदरा-बगेच्छां में पाणी मुफ्त देवणौ पड़तौ । मिंदरां रा पूजारी तथा बगेची रा सेवग चाबै जित्तौ पाणी न्हावण-निमटणियां सारु खांधै उखण'र लाय सकता हा । इण तरे री करारा नामौ मालकां अर बारीदार रे बीच में लिखियोडौ होवतौ ही ।

बाबू हुसियार बारीदार ही ।

अबै किठै वे मजा ? अबै तौ मसीनां सू पाणी निकळै । भाबी-संजोग सू श्रीजली जाय परी, ती, १) १॥) रुपियै पखाल विकै ।

कई दिनां में लोरु पुराणै टंग सू पाणी काढ़णौ ई भूल जामी । अबै ही पराथे हाय खेती है ।

जे कदास अण चीती हुय जावै तौ पाणी-पाणी रोंन्ना मरां ।

बाबै नै सृष्टियां मोरुटा बरस हुयग्या । पण वैरी याद भूलीजे को हैनी ।

## रमजान न्यारियौ

रमजान त्रिचलै खामणै रौ, बडी आंख्यां, जाडा भंवारा तीखौ नाक, गोरी गट्ट रंग, काळा भंवर केस, लांगदर धोती, सोवणै रंग री पागड़ी अर पंजाबी पगरखी पैरतौ हौ। मुल्लां रै उपदेस सूं, पछै धोती री जागा पजामौ अर पागड़ी री जागा टोपी पैरण लाग्यौ हौ।

रमजान नमाज पढ़'र कणै ई ठंडै-ठंडै में दिनगैई तौ कणै दुपारै रौ, सहूकारां रै घरां, सोनारां रै दुकानां खनली तथा बीजी ठावी ठावी जागा री धूड़, सीक्यां रै भाडू सूं बार'र छाजली में भेली करती। पछै बैनै फटक'र बैमें आंख्यां गडाय देंवतौ। इयां करण सूं, बैनै, सोनै चांदी रा खेरा-खंटा, नग अर कदे ई काई सोनै री जिनस लाघ जांयती।

रमजान न्यारियौ हौ।

लोक, नोरु-चारु करण जांवता जणै रोटीवाळा पइसा निकळता। पण रमजान रै तौ आखौ दिन धूड़ रौ ई काम। कैवत ई है—न्यारियै धूड़ में ई पाई।

रमजान, सोनारां रै घरां अर चांदी-सोनै री दुकानां रै आगली धूड़-फूस मोल लेंवतौ। वंई सेठा-साहूकारां री हवेल्यां खनली अर कईं जिंटे कईं लाघण री आसा होवती उण जागा री धूड़ भेली कर लांयती। आखी गळ्यां में भटकनी रेंवतौ अर आपरै जचती जिकी जागा री फूस भेली कर लांयती। इण तरै घौ, आपरै घर सनै धूड़ रौ मोटी दिग्गी भेली कर लेंवती। पछै सगळै घर रा धूड़ रै धंधै में लागता। एक खाड खोदता अर सगळी धूड़ बैमै नाख देंवता। फेर बैनै एक पूरसूं छाणता। पछै कईं दिनां ताई धेरै ऊपर पाणी छड़कता रेंवता। फेर बैनै फरकी कर'र धैरा लाडू बांधता।

सगळे लाड्यां ने एक मोटें चूले उपर चरतण में राखता । सायत घेने तिजाव री धूंधी देता कन फाई धीजी रसायण री किरिया सूं, धूड री लाड्यां मांय सूं चांदी, सोनी, तांयो अर पीतळ न्यारी-न्यारी काढ लेंघता । घणी वेळा ती, ड्यांरी मैतत मोरुळी फळती अर कदेई खाली मैततवाळा पद्दता ई निकळता ।

लोग इचरज करता के न्यारिया धूड मांय सूं चांदी-सोनी कांकर काढ लेवै हे ? कैयत हे--न्यारियो मोर पांय री सोनी उतार लेवै हे ।

रमजान हुंदरी ही ।

रमजान घर री आसूधो ही । चोखो खांवती-पीवती पेरती-ओढती । घर में मोकळा गैणा-गांडा हा । दो-दो गायां ही । घर में धीणी ही ।

रजगार इसी ही के ३-४ महीना डट'र मैतत कर लेवण सूं चरस भर री गुजारी निकळ जांवती ।

रमजान सोनी-चांदी गाळिया करती ही । भागी-टूटी सोनी-चांदी री जिनसां किफायत सूं मोल लेव'र चाने गाळती पछै न्यारी-न्यारी डळ्यां बणाव'र बेच देंवती । नकली, असली अर चळणमार सोनी री, घेने खरी परख ही । आपरें धंधें में, कई नै काढ'र को देंवती हीनी ।

रमजान चतर ही ।

रमजान ही हंसाळू, खुस मिजाज अर सोखीन । ईद री दिन देखी ती-साटण रा कपड़ा खरी जरी री टोपी, कलाबूत रं कामरी पगरखी ।

रमजान में, रईसी री लटकी ही । अखातीज अपर किन्ना री रुत में खूब धूंधा लगांवती । लटाव रा लटाव भरियोडा मंजे रा अर रंग-धिरंगा बडा-बडा किन्ना लांवती । किन्ना डील में लड़ना । लटाई नै, खळ-खळ टीली छोड देंवती । किन्ना गुडकता-गुडता थकास रा' तारा बण जांवता । पेच घुळना ती इसा घुळता जिको ना तो सुळमत्ता अर नाई कइरी किन्ना कटती । रमजान अर घे रं घरवाळा डागळे माथे ऊभा जोर-जोर सूं हाका करता-किन्ना तोडिया मतीना भाई रे, पेच लड़ रया हे, किन्ना कटियो नही हे । किन्ना इती पेटो छोडती

जिकौ मंजौ माथै सू ऊपर टिरतौ दीखतौ । किन्नां री लड़त में सइकडौं रुपया पूजीज जांवता ।

रमजान किन्नां रौ लड़तियो हौ ।

रमजान में, एक लत खोटी ही । नितरौ आखर बावण जांवतौ । बिरखा रौ सबदौ ई किया करतौ । नफौ तौ होंवतौ कदेसीक होवतौ पण घाटौ तौ नितरौ लागतौ ईज । आखर ऊगतौ जद क्यों पूछौ हौ रमजान री बात । खुसी रौ पार को रेंवतौ हौनी । खूब आपरी तारीफ करतौ । पीरजी नै सीरणी चढांयतौ ।

घर रे खनकर कोई सबदैवाळौ बेंवतौ दी सतैई रमजान, पैलडौ सवाल औ ईज पूछतौ-भाईजी क्या आखर खुलियो ?

रमजान सटोरियो हौ ।

गैमना पीर रै मेळै ऊपर, रमजान सगळे घरनै, ऊंठगाड्यां भाड़ै कर'र पीरजी रै दरसणा सारु ले जांवतौ । चठै खूब ठाठ सं रेंवतौ, खांवतौ-पीथतौ । फकीरां नै खैरात बांदतौ ।

रमजान धरमात्मा हौ ।

अबै रमजान बूढौ हुयग्यौ । सोजी घणी कमती पड़गी । काम-धंधौ कंई बण आवै नहीं । आखौ दिन खाट माथै बेंठौ हुक्कौ पीवै गप्पां मारै । सुमत सूकै तौ अल्ला-अल्ला करण लागै । छेकड़ अल्ला वैनै आपरी दरगा में बुलाय लियो ।



## सुगनों वहीभाट

सुगने लाई सोने से जुग देखियाँ ही पण आज तो घने लोरे जुग में जीवणी पड़ै है ।

दिनूगैदे, कागावासी छाण'र, दिसा-करागत सू निमट'र, खंखोळीं खाय'र, माथे परात धर'र, भुजिया-कचोळीवाळीं री हाट जावणी पड़ै है । उठे गिण'र नग लेवै । पाछीं घरे पूगे जिर्त्त १०-१०॥ री टैम हुय जावै । पछे पेट नै भाडो देव'र, माथे, माथे गमछेरी ईदाणी बणाय'र, बैरै ऊपर लोरी परात धर'र, उभराणै पनां वरसती लाय, उछळने खीरां में, रेलघाट तथा मजूरां रै कारखानां में पूगे ।

धोती ऊपर, लपेटियोई गमछे रै पल्लै, कदेई तो सूकी भांग अर कदेई गोळी, जावते सू वांधियोड़ी राखती ।

५-५॥ बजी रै अड़ैगड़ै, सुगनों, किठैई, बूटी-दासियां रै अखाड़ै में जाय हफती । पछे लोरी परात पसवाड़ै मेल'र, गोळी नै छाण'र, निमटण नै जावती ।

केई मजूर नगदी पइसा दे देवता तो केई हफती या महीनो चूकतो जाणे देवण री कैवता । कांकरई फर'र आटे री जुगाड़ दोरी-सोरी हुयई जावती ।

सुगनों ही ठिंगणै खामणै री, छोटी-छोटी आंख्या करडकावरी दाड़ी, अभियोड़ी जटा, टींडसी दाई नाक, टिरियोडा कान, लिलाड़ माथे सट्टर री टीकां, गुंढयां वायरी चोळो, गोडा साईनी धोतियो अर हाथ में घोटी लियां घर री मारग लेवती ।

घरे पूग'र थोड़ीं टावरां सं बिलम करण लागती । इत्तै ई ती, लुगाई नेडी सिरक'र धीरे-धीरे कैवण लागती-आज तो लण बधै हैं, तेल परसू ई

सुगनो वहीभाट ]

खूटग्यौ हौं, मिरचाई आजोकीज है । पूजती-कई साग लाया हौ तौ दे दौ,  
जिको सुधार छमक दूं । पछै बूटी रा दागा लागोड़ो गमछौ संभालण लागती ।  
पण साग किठै पड़ियौ हौ ?

नसै री तार में, भारी गळै सू सुगनौ उथळौ देवता-आपारै तौ दाळ  
जोयीजै सागरो क्या करणी है । दाळई सदा सुवागण है ।

दाळ ई वधै है, थानै काल केयो हौनी के चारांनारी लेंवता आया ।

सुगनौ कैतौ-हूँ तौ भूल आयी ।

जणै वा लायण चटणी चांटण वैठ जांवती ।

पछै सगळे जणा जीमण लागता जीम'जूठ'र टावर तौ सूय जांवता ।  
वहू वरतण मांजती, ऊंचौ पाचौ करती ।

फेर घणी-वहू घरगिस्ती री वातां करता । वातां करते करते  
ई, थकियोड़ा होवण सू, दोनां नै मेरा आवण लागती अर हुय जांवता  
गुडदापेच ।

सुगनै वाप-काकै रौ जमानौ देखियौ हौ । पुसकरणा बामणारी बड़ी  
विरत ही, वारां वही भाट हा । विरतरा हजारं घर हा ।

टावर रै जिलमतैई भाट री वही में वैरौ नांव मंडाईजतौ । भाट राजानै,  
मान सं बुलांवता । आछौ भोजन करांवता । ओछै सू ओछा पांच रुपिया अर  
वेसी आपरी आमना मुजव नाव लिखाई रा देवता । कोई पांचै कपड़ा अर  
गेणा देतौ ।

गांव-गोठ में ई भाट राजा नै घरस में एक-दोय वार जावणी  
पड़ती हौ ।

धियां अर हरख रै मौके माथे आसूधै घरवाळी कोई-कोई, भाट  
राजा नै, सोनैरा फड़ा-कंटी पैरांवती । आछा भोजन करांवती । वही में इण री  
दासलौ दराईज तौ ।



कोई नथी हवेली बणावतौ, खोळै जांबतौ अथवा और नामी-कामी करतौ ती बैरौ ई दाखलौ भाट राजा री बही में दरीज तौ । इण मोकै उणां रौ चोखौ मान-सनमान हांवतौ, चोखी परावती हांवती ।

उण बेळा, भाट राजा रै, किली बात री कमी को ही नी । चोखौ आदर मान ही अर सुन्न-सोरप सू गुजारी होवतौ ही ।

किठै वा माईतां री बखत अर किठै लाई सुगनै रौ जमानौ । आवै सई कै सू ऊंचौ होवण आवै, भाटांरी वही में नांव मंडायानै । अबै तौ मरणै परणै भाट राजा आवै तौ जीमजागौ बिरतबाळां में बौ हेत-उद्धार रैयोई कोयती । नहीं जणै, लाई सुगनै तै क्यों खुडिया खुचरतौ किरणी पडै ।

बिरत रा हजारों घर हँ घर दीठ घणा तौ पांच, थोडां तौ एक, भाट राजा तै नवा नांव लिखाई रा मिळणा सरू हुय जायै तौ लाई सुगनै रौ घर ऊंचौ आवैतै क्या देरी लागे । दाळद बात री बात में, धुप को जावैनी ?

जात री पीढयां अर नामा-कामां रौ पूरौ लेखी-जोखोई लिखीज जावै अर निकळ आवै भाट राजा रै गुजारैरी उपाव ।

पैला राज दरवार मै भाट राजा राजा री बही, पीढयां अर नातें री तरदीक सारू पेस हुया करती ही । इण सूई बांनै लाभ पूगतौ ही ।

पण देस काळ देखतां ती म्हारी श्री इतिहास अधूरोई पड़ियां रैवतौ दीसै हँ ।

## भीखी भठियारों

भोर री ठंडी बेला में भीखों घास-फूस अर छोड़ा बाळ'र भट्ट चेतन करती । पैला सरधा सं, ठाकुरजी ने हाथ जोड़तौ जिकै सं के बैरौ रुजगार चोखौ चलै ।

भीखै री बहू बैरै खनै मती रै रा बीज, गउं, जंवार अर चिणा लाय'र मेलती ।

भट्ट एक खानी, घर रै आगे चौकी ऊपर हौ । खनैई मोरुळी खुल्ली जागा ही जितै, बैरी बहू आपरी दुकान लगाया करती । चौकी माथै, घास-फूस री एक छपरो छाथोड़ौ हौ, छायां राखण सारू ।

इण काम सूं निपट'र, भीखै री बहू टावरां नै जगांवती । टावरां रा काळाकुट उणियारा, लुक्खा केस, पासळ्यां दीखै, कइ रै माथै रै केस इसा कतरियोड़ा जाणै भेड मूंडी जियोड़ी हुयै । छोरी रा भीटा बिखरियोड़ा अर मैल-परसीणै सूं चिपियोड़ा ।

फेर गूढ़ड़ा सांठती, टावरां नै दिसा बैठांवती, बारां हाथ-मंडा धांवती अर चासी फूस-चारी काढ़ती ।

टावर, हरखांवता-हरखांवता, बाप खैन जाय बैठता । बाप किरण तर-धान सेकै है, आ बात, आंख्या गडाघ'र देखता । एक-बीजै सूं आगे बैठण सारू लड़ण-भगड़ण लागता, आपस में, एक बीजेरा केस खांवता अर चूटिया चोड़ता । कामरी बेला भीखों इयारी बढमासी सं उफतर कैंतौ-बळी आचडाई । फेर बहू नै हेलौ पाड़'र के तौ-लेजा धारे कुण कयां नै ।

मा तड़कर कैती-आधा बळौ पीटणै पड़ियां अर घांसर मांय ले जांवती । लुक्खा सोगरां रा टुकड़ा तोड-तोड'र एक-एक टुकड़ौ सगळ्यां नै देवती । सीराण में लायां नै ओईज मिळता अर इण सं बे राजी हुय जांवतां ।

ठामुरजी रे घर सं रूप चंटती घेळा, भीखे री हाथ सगळां सूं नीचें रेय्यां ह्यो । वो काजळ रीं धीरीं थर कोयल रीं मासियाई ही ।

धू दुपारें, बरसती लाय में, वो घर सूं घाट निकळनी । एक मोटी थोडी में, चिणा, मती रे रा बीज, धाणी, फूल्यां, धोटे-दोटे मेली कोथळियां में भर'र ढंग सूं जचावती ।

बीज दोय तरेरा-जूणिया थर अलूणा, चिणा तेन तरेरा छोलियोडा, विनाछोलियोडा थर लूणिया-दळदिया छोलियोडा राखती । एक पासी ठूलिया मेलती ।

माथे, माथे मेली-चीगटी विदरंगी पागड़ी, डील ऊपर फाटीं मेलीं चोळीं थर पगां में कार्यां लागोडा जाडा जून पैरियोडी, भीखो, 'लौ चवीणो लौ चवीणो' केंवती, चौक'र गळ्यां में घूमती रती ।

थोळखियोडी बोली सुण'र, घर-घर सूं, लुगायां, टावर वैनै हेला पाइण लागता । आयो ई माजी, आयो ई दादीजी, आयो भाइया कैर, वां, सगळां नै राजी राखती । कोई पइसां रा तां कोई धान रा चिणा-बीज लेती । वो, सगळां नै, ठूलियां सूं मिण'र चवीणो देती । पइसा एक डब्वी में थर धान कोथळी में भेळीं करती ।

भीखी ह्येसावियो ही ।

सुकरवार नै खास तौर सूं बैरी घणी उडीक रेंवती । वै दिन चिणा खावणा सुभ समंभीजे ह्ये । वै दिन तां लाई नै केट ई को खावण देंवता हानी । हेली ऊपर हेली आवती । वै दिन वैनै दोय-तीन बार भाज'र घर सं, चवीणो लांक्णो पडती । बीजे दिनां सूं, आज बैरे चौगणी विकरी होवती । ह्यां तां रोटीवाळा पइसा, आडे दिम ई, वो काढ लेंवती ह्यो ।

भीखे री बहू चौकी माथे बैटी चवीणो वाचया करती । दोयां री मजूरी सूं धाको धकती ही ।

दोये सैणा थर घर लोचू हा ।

सिंज्या पड़ियां सूं कई, क पैली भीखीं घरें पूगतो । चिलम पीवतो ।  
लुगाई वैरी आटो पीसती । वौ धीजै दिनुं सारू सामान लेवणनै चौबटे  
जांवतो परों । भावताय चोखी तरें जाचर जिनस लेंवतो ।

भीखीं जाणकार वौपारी हौ ।

घर आंवतै रात पड जांवती । पछै वौ हाथ मंडौ धोव'र बिसाइ  
खांवतो । टाबरां रौ लाड़ करतो अर बानै रमावतो-रीभांवतो ।

इतै ई तौ वैरी बहू थाली पुरस'र ले आंवती-कखता-कखता सोगरा  
अर लूण भिरचारी चटणी ।

भीखी संतोखी हौ ।

रातनै पाडै-पाडोसरा भठियारा वैरी चौकी माथै आय जमता । गप्पां  
मारीजती । काण्या कैयीज ती । रुजगार-धंधै रै चलचाल री बातें चलती ।  
चिलमां चेतार्इज ती । औईज लायां रै जी सोरों करण रौ उपावे हौ ।

भीखी मेळू अर मौंजी हौ ।

भीखी तौ परलोक पूगग्यां । पण दुपारै री वेळा कणैई-कणैई इसी  
लखाईजै हे कै जाणै वौ कड़क बोली में, 'लौ चवीणो लौ चवीणो' हेला  
पाड़ै हे ।

## कावली नसीरुद्दीन

सळांदार मैलौ-मैलौ घणो ढीलो जाडो अर जागा-जागा चीगटो चोळो, एठ खांधें ऊपर लोरो लंबां भूंगळो लटकायोडो धीर्जे खांधें में एक गोथळी, माथें कुल्लो अर पेची अर पगां मै हाथ भर लंबा चरमर-चरमर करता जूत पैरियोडा 'हिंग लेलो, हिंग लेलो' कैवतो कावली नसीरुद्दीन, आपरें वेद सागै जद म्हारी गळी में वडतो तो आगुंद-री लैर वै जाती। घर रे आगै धरियोडें वडें पाटै ऊपर परवार री मंडली में धिराजियोडा वैदराजजी हरखर हेतसूं हाथ बघायर कैवता, 'आवो खान वादर, वैठो!' तो खां साव ई खुस हो न हकीमजी कैर पाटै ऊपर बैठ जांवतो।

लुगायां खांसावरी ओळखयोडी बोली सुण'र बार आवती अर एक-दो जण्यां रुखडी दादी नै बघाई देवण नाठती कै थारो 'कावली भाई' आयो है।

छोरा-छंडा किलोल करता ऊंतावळा-ऊंतावळा कैता—

मीयौ मछी मारणो,  
कागै नै उडावणो,  
कागै मारी टांच ए,  
मीया मरग्या एक सो'र पांच ए।

गळी-गुवाड रा बडा-बूढा छोरानें तडकता अर कैता-कावली बाबोजी हे, मीयो मच्छी मारणो नहीं कैवणो। दाकल सुण'र छोरा चुप का होय'र पाटै खने आय ऊभता। कावली बाबो कई छोरै-छोरी नै दो-चार काजू, कई नै थोडा सा नेजा, तो कई नै दो-चार बिदाम दे'र पृछतो—रुखडी राजी हय, गोमा राजी हय, जावो सबको सलाम वोलो, मेवा दूंगां। जणै छोरा ऊंतावळा-ऊंतावळा एक सागै ई कैता हां राजी है। अर नाठ'र आपरी दादी नै बुलावण जांवता।

पछै रुखड़ी दादी काबली भाई री थाली पुरस'र लांघती जिकै मैं जाडी-जाड़ी रोत्र्यां, गवारफळी-खाखड़ी रौ साग, घी-खांड घाल'र चूरियोडो चूरमो-अर कटोरी भरियोडो दूध रो होत्रतो । बाबो कैतो लाहूला बैन, जणै रुखड़ी दादी भीठी भिड़की दे'र कैती-लाहू पडिया जाय है । लाहू कटै सूं लाऊं रे डाकी ? तूंतो घोवागटणो है । लाहू म्हारै इथै भतीजै यगा । सांभ'र राग्विया है । तो भतीजै को जल्दी ला—कै'र बाबो जोर सूं हंस देवतो ।

जीमणा री मिठाई विकणी आंघती जद दादी एक दो रुपयां री मिठाई मोल ले'र इयां चगां राख मेलती । थोड़ी मिठाई टावरौं साहू इयां-रै सांगे कावल पण भेजती ।

जीमजूठ'र बाबो कोथली खोलतो अर बैन, बैन रै टावरां साहू कावल सूं लायोडो मेवो अर ही'ग देवतो ।

दादी अत्रै लागती ओलभा काढण-कदैई दो आंगळ रो पुरजो ई को मेलेनी, मोहू चोर है । माफ करो बाई अब जरूर भेजूंगा, खुदा के फजल से घर पर सब खुश हयां कै'र बाबो पिंड छोडावतो ।

पछै आबोड़ी सगळी लुगाया सूं मीठी बोल'र कई न कईदे'र सगळयां नै राजी कर'र मुतलव री बात छेड़तो । हींग रो डब्बो खोल'र लागतो माल बेचण । कई कैती-बाला बाबा ! तूं तो लोभी घणो, घण दाम लेवै है । तो बाबो कै तो-अच्छा मरजी आत्रै दे । कई कैती-हींग चोखी कायनी कोरो भिस्सो आटो चलै हे । तो अचा-अच्चा दूसरा नमूना देवो बाई, अमारा हिंग माफक दूसरा हिंग नहीं मिलेगा, हमारा हिंग घात अच्चा है. वीत सस्ता हे, कैतो ।

बाबो दानों अर सेणों बोपारी हौं ।

काबली नसीरुद्दीन कावल सूं हींग'र मेवा लाय'र अट्टे चोखा पइसा खड़ा करतो-अर अट्टेरी जिनसां कावल में बेच'र दूणो चांगणो नफो करतो । काबली बाबो पक्को हैसाधियो हौं ।

काबली बाबो आपरो अघेलो ई को छोडतो होनी चीजेरो भळाई पइसो वैमें रेजावो । पाई-पाई उघराई कर'र पछै काबळ दीसी मूंडो करतो ।

काबली बाबो पूरो लोभी हो ।

सबदो पटावण सारू बाबो कूड कपटई केवट लेती हौ । आपरो माल हळको होंवतो तौई, अमारा माल वांत अचछा हय, हम बुढा हय, जूट नहीं बोलता । अमारा भाव सस्ता है, कैर सबदो पटाय लेतो ।

काबली बाबो चोखो चंट अर चरियोडो हौ ।

काबली बाबै री उमर ७० रै अडैगडै ही पण तौ ई चैरो लाल, बड़ी-बड़ी आंख्या, जाडा भंवरा, मैदी सू रंगियोडी दाड़ी, उफसियोडा जबाड़ा अर केस करडकावरा हा । क्यों नहीं हो ये, उ.मै खांधै मेवा चरतो हौ अर चोखो खावतो हो—खाध करै उपाधा । आपां रै अठै वूदां दाई चैरो मूंडो होऊँ दाई पोलो, आंख्या रा खुडा बँठोड़ा, जबाड़ा चिपयोड़ा अर कवाड़ा भिलियोड़ा वो हानी । वापडै अठै रै डैणां नै चोखी खुराक अर घपटवां मेवा कठै मिळणनै पड़िया है ।

काबली बाबो कड़कवाळो हौ अर बत्तीसी खांडी को हुयी ही नी ।

काबली बाबै-रो वेदो बैसू घणों चोखोर खरो हौ । कणै कणै ई वौ एकलो आवतो जणै सगळै बैरै खनै मेवो अर मोफली हांग लेता कूडौ वौ-कपटी को हौ नी । बैदराजजी ओणनै वौ 'खुदाई खिदमतगार' दळ री वातां सुणावतो जिकै रै वौ एक सभासद हौ ।

काबली बाबो अर बैरी बैन ठाकुरजी री दरगा में पूग ग्या, पण वांरी याद हालतां ई कालरी वात दाई बणियोडी है ।

## अलखियाँ

एक ऊंचो ऊंचो धोती, गिण माथे वडो दैलान्त ॥ बार कर कोटा री  
 ड । मांय दो पक्का थान—एक भैरू जी रौ, वी जौ हडमानजी रौ । खनै  
 एक भूपड़ी जिकै में अखंड जोत जगै । एक खूणै में—इकतारी, कांगसिया,  
 रताळ, अर च्यार पांच चिलमां अर गांजै रौ डब्बो । बीजै में खप्पर अर  
 वाऊ । तीजै में धूलो, चीपियौ, तथौ, कठौती, हांड्यां अर ठीकररी हटडी ।  
 वनै ई एक आळी में चिमनी अर तील्यां री पेटी । चौथै में एक लोरी पेटी  
 जेके में काली ऊन रा लंबा-जाडा बटियोडा डोरा, कइयां में घूघरा पोयोडा  
 अर एक टोपसी में तेल संदूर । खनैई दो भगवां पंडिया । खूटी माथे एक  
 अंगोळी अर लंगौट लटकै ।

भूपडै रे आगै एक लंबी-चवडी चोकी जिकै माथे भांग घोटण री  
 सिल्ला लोड़ी अर एक पाणी री भरियोडी बालटी अर लौटी पड़ियाँ । बीजै  
 पासी दो मांचा पड़िया जिकै माथे टाटरी राल्यां अर तकिया राखियोडा ।

भैरूजी रौ थान खनै एक गैर गंभीर दिखत जिकैरी छैया में एक मातौ  
 काळी कुतौ जीभ कादियां हांफतो बैठौ ।

भूपडै में रैवै दो जणा : एक गुरु बीजो चेलौ । लोग इयां में  
 ( अलखिया ) कै वै । चेलौ कुंड माथ सू पाणी खांचर लंगोटी अंगोळी मेल'र  
 वारै मिनान करण री सगवाड करतौ ।

सिनान कर'र गुरु जोतवाळी सकोरै में धी घालतौ । पछै सिपाई  
 कवाज करैयां पांच पांडा आगै-लारै धरतौ पाठ करतौ रैवतौ । चेलौ टिकड  
 सेकतो जितै गुरुजी कवाज करता रैवता । पछै भैरूजी हडमान जो रौ भोग  
 लगाय'र दो ये जीमण बैठना । थोड़ी बिसाई लेवता । चेलौ जितै भूपडै नै  
 पाणी सू तरानतर कर देंवतौ ।



इत्तैई तौ मंडली आय जुटती खडकण लागता एकतारौ'र कांगसिया ।  
चेतती सुल्फैरी चिलमां । नसैरी धुन में वे किणी वीजै ई लौक में भिचरता ।

अलखियौ बाबौ सतसंगी हौ ।

दिन ढळियां सिला साथै रंग लागता । भांग धूटी छणती । जरदा  
पती लागती । मंडलीवाळा निपटण जांवता । चेली आया-गयां री टैल करती ।

अलखियौ बाबौ अखाडची हौ ।

पछै लोग-जुगायां आय पूगती । कोई कैवती छोरै रौ पग कूंडालियै में  
आयग्यौ दीसै हें । भाभडा-भूत ताव रैवै है । कोई निजर रौ डोरी कर  
देवण रौ कैवती । कोई कैवतो म्हारी लुगाई उपर कैणई टूणा टामण कर दिया  
दीग्वै है, अधगेली हुयगी है । दावर हाथ लागे कोयनी । कोई कैवतौं म्हारै  
घर में मंगलवार नै किणी सूयां सूं बीधीजियोडौ संदूर चरचियोडौ पूतळौं  
नाखग्यौ है । जदसूं ई म्हारै घर में रू-रू में पीड़ उठगी है । कोई कैतौं-मनै  
डर है कै म्हारौ वैरी कटैई मनै मूठ नहीं मार देवै ।

बाबौ सिनान कर'र लाल बस्तर धारण कर'र सगळां नै उपाय  
बतांवतौ । भाडा-फंका, डोरा-गेंडा अर तावीज देंवतौ ।

कणैई कईनै बिच्छू सरप खाव जांवतौ तौ बोई उठै आय पूगती ।  
बाबौ भाडौ दे'र जैर उतारतौ ।

लोग दुखी आकळ-ब्रकळ आंवता खुसी-दुसी जांवता ।

अलखियो बाबौ परोपकारी हौ ।

सिज्या पडन सं थोडो पैली अलखियो बाबौ आप रे लटूरिय केसां  
उपर राख रमावतौ, लिलाड़ साथै संदूर री बड़ी टीकी लगांवतौ, वृकियां साथै  
घूघरा पोयोडौ काळो लंबी डोरो कस'र बांध ती सरीर उपर राख रमांवतौ,  
कंवर में घूघरा बांध तौ पछै टणमण टणमण करतौ भैरु भोळी लेर घर-घर  
सूं आटी मांग ती । हींगळू दाई आख्यां, वेदंगौ भाज अर घूघरां री घमक  
रे मागै वैरै 'बम-बम', 'अलम्य-अलम्य' री वाणी दावरां अर कंघळै काळजै  
वासां नै बसावेंवती ।

आटी पैला खपर में लेंवती, पछै मैली-चीगदी भोळी में घालती, इणतरै, वौ सैर री गळ्यां में घूमती कदास कोई आटी नहीं घालती अथवा जेज करती, ती बावो वैरै घररै आगे पांच पग आगे पांच पग लारै धरती कवाज करती रैती । गिस्ती नै अथपर आटी घालणी ई पड़ती जणै धरणी छोडती ।

अलखियो बावो धरणी देवणियो ही ।

घरे पूगतो जितै रात पड जांवती । पछै दिसा-फरागत सूं निपट'र सिनान करती । फेर भैरूजी-हडमानजी रै जोत करती अर सदा मुजब कवाज करती-करती पाठ करती रेंवती । इतैई में चेलो टिक्कड सेक लेंवती । पछै भोग धर'र, दोये जीमण लागता ।

कारज सिद्ध होवण सूं, सरधाळू-भगत मोकळी सामगरी पूगाय देंवता । फक्कड भोग धर'र आप परसाद लेंवता अर सगळां नै वैच देंवता ।

एक बार, एक भगत पांच सेर आटी घी, खांड, अर मोकळी मेवो लायौ । जोत सांरू अळूती घी राख'र बाकी सामगरी री भोग रांध लियो । घी खांड री चकाचक चूरमो वणियो, मांय मेवो पधराइजियो । पछै टिक्कड रा वरावर-वरावर पांच भाग करीजिया । एक गाय, एक कुतै एक पंखरुवां री अर दोय बीजा ।

पछै सकोरै में, एक वडो खीरी राख'र ऊपर सूं धूप घी सींच देवती । फकदैणी सी जोत जाग उठतो । थोड़ी चूरमां जोतरै ऊपर मेलती । पछै भोग धर'र परसाद सगळांनै वैचीजती । इण तरै सामगरी काम में आंवती ।

नगदी भेट री, भांग वूंटी, सुलफौ, गांजो, जरदा पत्ती आय जांवती ।

अलखियो बावो फक्कड ही ।

अलखियै बावै नै परलोक सिधारियां मोकळा वरस हुय गया । हाल लोक वैने भूलिया कोयनी । वैरै अस्थान रै खनकर निकळतै पाण वीत्योडी सगळी वातां याद आयै बिना को रेंवैनी अर इसी लखाइजण लागै जाणै अलखियो बावो कवाज करतो पाठ कर रयो है ।

## रामलौ भंगी

जागा-जागा फाटोड़ी, मैलौ कुच'र ढीली ढालौ चोळौ, मार्ये लीरा लटकतौ दमालौ अर पगां मै द्योय मेळ रा खांसड़ा पॅरणां, रामलौ वापडी, सीयाळें री ५ वजी, सामी ठंडी हेल चलती जणें, म्हारी गळी मै आंवतौ ।

धो हाथ मै एक छाजली, वगल मै वासारी सीक्यां री लंघौ भाइ अर खूजे मै, टूटोड़ी चिलमड़ी राखतौ ।

गळी मांय सू फूस-फांडो चुगर पॅला थोड़ी सेक करतौ । इयें खूणें सू वे म्खूणें तांड, सगळी गळी, चारतौ । इणी तेंर एक रे वाद धीजी गळी भाइतौ । वैरी विरत वडी ही ।

मू'घारें थकै, वैरी वह, फाटां घाघरियो पॅरणां, पूर-पूर मैलौ ओढ़णी ओढ़ियां अर आगे-आगे गधी नै टोरियां आंवती अर आपरें धणी नै जाजरू ऋजावण मै मदत देंवती ।

रामलौ गळी री भंगी हौ ।

लोक जद सीरै मारिया सीरख मांय सू मूंडो ई को वाढ़ता हानी, तद, लाई रामलौ काम मै जुटतौ हौ । हाथामूं काम करतौ अर मू'डै सू मीठी राग मै ठाकुरजी रा भजन गांवतौ ।

रामलौ भगत हौ ।

सूरजनारायण जद ऊंचा चढ़ता अर गळी तावडै सू भरीज जांवती, जणै टावर-टीकर तावडौ लेवण नै नीसरता । सी-सी करता सगळे गांवता—

काढौ सूरज बाबा तावडियो

जीवै थारी डावडियो

फेर — सी पडे छै डाढौ

कुप्पी सैं घी काढौ

रामूडै रो छोरोंई तावडै में एक पसवाडै ऊभो रेंवती । छोरा बेंने काकरा मार'र केंवता-आघो बळ भंगीडा भींटलेसी । छोरो केंवती-मां बाप हूं, तो घणो आघो ऊभो हूं । जणै छोरा-चिघ'र केंवता साळा ! थारी छैयां पडै हेनी ? रामली सुण'र उल्टो आपरें छोरे नै तडकतो थर बीजै खानी जाय'र, ऊभो रेंवण रो केंवती । गळी रै टाघरां नै केंवती-हुकम कंवर सात्र रा, बणिया राखो मादेव ।

रामली जरणावाळी ही ।

काम पूरो कर'र रामली घर-घर सूं रोटी मांगती । ठंडी-भासी रोख्यां थर बासणै-कूसणै साग-दाळ सूं रामलीरो ओड़ी भरजांवनी । कई घर सूं, रोटी नहीं मिळती तो रामली कई को केंवती हीनी ।

रामली संतोखी ही ।

गळी में स्वाड-पिण्यार रो काम पडती, तो रामली, मई नै-मास तांई, मैली उटांवती । जिकै रै बदळै में वैनै रोक रुपियो, धान थर स्वाड रा, मैला गिदा गाभा मिळता ह्य । बीजो स्वाड रो नेग ई मिळती ।

उतारू मैला-फाटा कपड़ा, वे ई केई धार हाथा जोड़ी करणै सं बिरतवाळा, धैरै सामां बगाय देंवता । इण तरे रामली रै पेरण-ओढ़ण रो सगवड़ होंवती ही ।

गळी में, गाय-ढाढो, मिन्नी-कुत्तो थर चिड़ी-कबूतर मर जांवती, जणै रामलीरो बडी पृछ होंवती । जित्तै, मरियोड़ी जिनावर घर रै आगे सूं नहीं धीसीजती उक्तै धरवाळा खाय-थीय सकै नहीं । रामली मरियोड़े जिनावर नै, धीसतो जणै जाय'र संकट मिटती । इथे रो वैनै धान-रोटी थर पईसां मिळ जांवता ।

धौ मरियोडै जिनावर रो खाल काढ़'र चौबटै में दामां रो पूरी कस-वड़ लगाय'र बेच देंवती ।

रामली हुसियार घोपारी है ।

गळी में, जीमण-जूटण होंवती जद रामली मवडै सामो वैठो रेंवती । गाय-ढांढां थर गिडकडां नै काढ़ती । केंवती ऐट-जूट, मने घताइजो मां-बाप !

धूड अर पाणी में भीजियोडी रेंठ-जूठ, एक कडाई में बैरी खातर नाई भेळी कर राखतो ।

लाई सीयाळी में आधी रात तांई आस लगायां मयडै सामी बैठी रेंवती । काम-काज निमतणै सूं कदेई ती घर-धणी वै बेळाई रीत री मिठाई पुरस देंवती । कदेई 'दौड़जा, काल पुरससां' कैय'र, आड़ी जड़ लेंवती । वापड़ी 'जो हुकम' कैय'र घर री मारग लेवती ।

दूजै दिन रामली पावड़ी कुदाळी लेय'र आंवती अर भय्यां रा कोयला काड़ती । बोरयां में भर'र लेजांवती अर बेच'र टका खड़ा कर लेंवती ।

रामली घर लोचू ही ।

भंगीड़ा रातनै थकाण मिटावण अर जी बेलावण खातर दारू पीय'र फेल करण लागता । पण वो ही रामदेवजी री भगत । दारू रें सामोई को जोंवती हीनी ।

मिंदर में मंडळी में बैठ'र मस्ती सूं वो इकतारै उपर सबद गांवती अर आपरी जिनामरां जिसी जूण रें दुख नै भूल'र किणी बीजी आलोक भोमका में बिचरती । भंग्यारी मंडळी में बौ, 'मारान' वजती ।

रामली ज्ञानी हौ ।

केई खोड़ीला मिनख ती, लाई रामली सूंई मांधी लगायां विना रेंवता को हानी । वे कैयता अठै सफाई को करीनी, उठै को करीनी । रामली 'लौ मां-बाप' कैय'र सफाई करण लागती । पण खोड़ीला खोड़ थोड़ै ई छोड़े है । आपड़ी उफत जांवती । अठीनै थो साफ कर'र जावै उठीनै वे फेर गिंदगी बिखेर देवै । उपर सूं सभोग औ देवै—काम नहीं होवे तो छोड़दे विरत थारौ वाप बीजां आय जासी । घणी उफतियोड़ी रामली कदेई रीसमें जबाब देय देंवती किणरी जाड़ है जिको म्हारै उपर आय जावै । आवै जिके नै न्यात में खैणी है'क नहीं ।

रामली किरकैयाळी हौ ।

## विरघु सेवग

विरघु रै वधेपो को होनी । दोई जणा हा—आप अर बहू । विरत बडी ही जिकै सूं मजै सूं काम चलतौ ही ।

बहू विरत रै घरां में आडै दिन बडी पापड़ करावती । हाथकाम, जिदोई, जनोठण, विरध, मायरे मोसे रै, जान, बरी अर भाईपै रै मंगलीक टांकडां में बैरै कामां री पोट खुल जावती । पोकरणै विरामणा में सावै ऊपर सामूहिक जिदोई अर बियां हुवै । लायण बहू नै, सास खावण नै ई वखत को मिलती हीनी, फाई फींटी हुय जावती । तिकै ऊपर तेडै ऊपर तेड़ा, जितै मोड़ी पूरै उठै ई ओळमौ । इण मौकां ऊपर वा तेड़ा हांकारा, धान सोवणौ चुगणौ, मसाला पीसावणा, मणाबंध बड्यां पापड़ करावणा अर मंगलीक गीत गवावणै में, अंग तोड़'र मदत करती । जिकै रै वदळै वैनै चोखी रीत रकानौ मिलतौ, कपड़ाई मिलता ।

विरघु रैई इण मौकां ऊपर खांच-ताण रैवती । वैनै ई, तेड़ा हांकरा करना पड़ता अर विरत रै घरां में हरेक मौकै माथै हाजर रेवणौ पड़तौ । मंगलीक संख धुनी करणै री तौ बैरौ खास काम ही । वो सगळां सूं आगै आगै संख बजावतौ दुरतौ पळै सगळे लारै दुरता । सामूहिक काम होवण सूं, वो कपड़'र वो कपड़ै । लाई कइ नै ऊत्तर दे सकै नहीं । कणै ई, कायो होय'र, लाचारी जताय'र, हाथा जोड़ी करै तौ घर धणी री मंडी चढ़ जावै तौर वदल जावै ।

इत्ती खांचा-ताण, हैरानी अर कामरी मार सेंवणरे वदळे में विरघु अर बैरी बहू नै, इण मौकां माथै, नेगचारै रै रूप में जित्ती परापती होवती उत्ती सूं सारी कसर निकळ जावती ।

विरघु विरत री सेवग ही ।

महादेवजी री मिंदर क्या ती श्रीमाली ग्राहण क्या सिन्धासी अर क्या सेयग पूजे । तो सित्र मिंदरा रें पूजन री सेयगां री चारी बंधियोड़ी ही । कई री चारी दिनांरी आंवती तो कई री मईनां री । विरधु री ही चारी आंवती । उण बेला री चढ़ावो पइसा टका नारेळ, चस्तर, चावळ सोपारी अर महादेवजी ऊपर दळायोडो दूध अर घी विरधु नें मिळतो ।

विरधु पूजारी ह्यो ।

विरधु नित्गैरी विरत रे घरां में फेरी फिरण जांयतो । हाथ में एक वड़ी थाळी अर वेंमें मेलियोडी एक छोटी कटोरी चंनण सूं भरी रेंवती । 'जे ठांकुरजो री' केंर बी, घर में वड़नी । घरवाळा चंनणरी टीकी लगायर, एक मुट्टी आटां थाली में घाल देंवता । घरे पूगनी जणे थाळी आटे सूं भरीज जांवती ।

विरधु फेरी फिरणियो ही ।

मरणौ जिसे अमंगळीक मौकां ऊपर वेंरे अर वेंरी बहू रें मोकलो काम-फाज खुल जांवती ।

मरणवाळें वूद प्राणी रे लारे खीचडा होवण री रीत है । 'खीचडा' मृतक भोजन नें कैवै है । आदू री रीत ती आही कै खाली बाजरी री खीचडो अलूणौ रांधीजतो । जिंदोई दारां नें एक मिरियो अर बाकीरांनै एक टीपरी घी मिळतो । पळै कढी अर फिलका होवण लागग्या, जिकै खाली बडा नें घालता टावरां ने नहीं । जिकैसू बधते-बधते, आ रीत थागा देयगी । अवे ती फुरवां भोजन होवण लागग्या । खीचडो ती कोई नहीं करै वदळें में चावळ दाळ अथवा खीचडी करै ।

ती विरधु नै, भाई-विरादरी रे घरां में खीचडां री नेती देवण नै जावणो पड़तो । भहर होवणो पड़तो ।

वेरी बहू, काई मेलै में, पृङ्गां बटावण में, दाळ दळावण में, आटां पीसावण में, धान चुगण में अर मसाला पीसावण में अंग तोड'र मदत देंवती । दोये धणी बहू उठै ई जीमता ।

विरधु कारू हौ ।

बखत बद्दी । सेवगां अर विरनवाळां रा सम्बन्ध मीठै सूं खारा हुयग्या । सेवग कैवण लागा म्हे वामण हां, सूदर कोयनी । इतिहास पुराणा रे पूरावै सूं वे आपने शाकद्वीपी ब्राह्मण सिद्ध करण लागा । बड़ी बड़ी सभावां कीनी ।

पुसकरणा ब्रामणां सेवगां सूं आपरै मिंदरा री पूजा छोडायली । इणां भहर होवणौ अर खीचड़ा जीमण बंध कर दिया । मरणै-परणै आवणौ बंध कर दिवौ । दोनां रौ नातो दूटग्यौ । सेवगांरी जागा गौमाळी काम करण लागा ।

विरधु ई विरत छोड दी ।

विरधु री विरत रे घरां में घरवाळा जिसी माण-काण ही । टावर-टीकर, वेनै काको-बावौ केर बतळांयता अर जीकारौ देवता । बौई सगळां सूं माईदां जिसी वरताव राखतौ ।

विरधु अर बेरी बहूनै परलोक सिधायानै मोकळा बरस हुयग्या ।

मेळजोळ री मीठी वातां, मीठी टेम टळ भलां ई जावौ पण वरसां छेदै ई बैरी भीणी मीठी सिमरती मनां में मंडी रेवै है ।

आज ई पुराणी रीत-रिवाज री चरचा चलै, जणै, विरधु री सांगोपांग चितर एकरसी आंख्या आगै फिरण लाग जावै गोरौ रंग, टिंगणौ खामणौ, अध बिचली आंख्या, लिलाइ भायै चंनण री आड, वानां में मुरक्यां व भंवरियो, डील उपर चोळी, खांधे डुपटौ, गोडां साइनी धोतियो अर पगां में देसी पगरखी ।



## रुघो खल्ला गांठणियो

आंखण काढ़ते १ घेसाल-जेठ रे तावड़ें में, इग्यारे वजी रे आसरें, वयां में खालड़ें री थेली लटकायां, खांधे ऊपर नींगळियोड़ीं अर स्यांळ आयड़ीं दूणियो लियां, घोटी री भागी-दूटी अर चींध्यां लपेटियोड़ीं लकड़ी रे सायरें, खाथो-खाथो पग उठांवतो, रुघो, म्हारें चौक में, आया करतो ।

तुक्की-मुक्की करड-कावरी दाड़कली, काळी दराय उणियारो, माथे ऊपर विदरंगी लीरा लटकती पाग लपेटियोड़ीं, टाट उघाड़ी, मैलौ कुच गुंढयां वायरों चोळीं पैरियोड़ीं, आंख्यां नीचे छोटी-छोटी रेखावां अर कान टिरियोडा देख'र, सैज में ई, इंदाजो लाग जांवतो, कै, रुघे मोकळा सीयाळा-ऊनाळा देखियोडा अर ठंडी ताती सैयोड़ी है ।

चौक तावड़ें सं भरीन जांवतो । जणै, सेठ गोमदरामजी रे पाटै रे नीचे, मैलै पाणी री कूंडी खनें, धूड़रें विछाणां ऊपर ई, अबधूल दाई, रुघो, टांगड़ा पसार'र, थोड़ी विसराम करतो । पछै, सेठां रे घरसूं, पाणी री दूणियो भराय'र, आंख्यां छांटती, पाणी पीवतो अर चिलमड़ी चैताय'र दम लगांवतो । फेर, थेलै मांय सं, बोदी खाल रा टुकड़ा, नवी खाल, सूत री गेड़ीं, जाडी सूई, सूधो, खाल चीरण री तीखी मूठदार पाती, छोटी चौकोर भाठी अर खाल भिजोवण सारू पाळसियो काढ़'र, ठोड़ री ठोड़ जचांवती । एक पसवाड़ें दूणियो अर दूटोड़ी चिलमड़ी मेलतो ।

चौकरा, सगळे, रुघे री माण-काण राखता हा । लुगायां, बेरे आगे सूं, पगरखी पैरियां को नीसरती ही नी । कदास, भूल'र अणजाण में, कोई नीसर जांवती, तो, रुघो वैधतो-आ तो खसम रे माथे ऊपर खल्ला ले जासी । लायण, लजसाणी होय'र, ऋट ई, पगरखी, हाथ में उत्राय लेंवती ।

चौकवाळा, क्या साईना क्या छोटा, सगळे बैने, 'रुघ्यौ दादौ' कैय'र वतळांवता हा। मरणै-परणै, जिलमणै-खूटणै ओणरी, बैने, पूरी-पूरी ठा रेंवती ही।

धीनण्यां अर टावरां री, फाटी पगरखी, देखतौ जद, टो'कर कैवतौ-खोलजा पगरखी, हणै गांठ देऊंला, कदास पग में, कई खुभ जावै जणै। वां री पगरखी री गंठाई को लेंवतौ हौ नी। बड़ा-बूढ़ा, आपेई, आपरी पगरखी री गंठाई देय जांवता तौ ठीक, नहीं जणै, दादौ, तगादौ को करतौ हौ नी।

कदेई, दादौ, वातां में लाग जांवतौ अर सिंज्या पड़ जांवती, तौ, कई न कई घर सू, ऊनी दाळ-रोटी आय जांवती। टूकें में, चौक में, बैरी, माईतां जिसौ माण हौ।

जीमण-जूठण में, कारू-कमीणां नै, बीदौ निबड़ियै पळै, नेग पुरसै है। पण, दादौ नै तौ, माण सं बैगोई जीमाय देंवता अर टावरियां बगां कई घाल देंवता।

सीयाळे में, मद्रसै री छुट्टी रै दिन, तावड़ै में, छोरा, दादौ खनै, बूभू बूभाकड़जी रा चुटकला अर काण्यां सुणता अर घणा राजी होंवता।

साईनां, दादौ सू, गिस्ती री वातां में, सलासूत लिया करता।

एक वार, गोमदरामजी रै घरै, छोरी रौ व्यांथ हौ। मिठाई बणावणै अर जान जीमावण सारू कोटड़ी जोयीजती ही। एक कोटड़ा, सगां री ही, पण वे, हां-ना रौ खुलासा उथळौ नहीं देय'र, टरकांवता हा। कदे, कैवता-मुनीम जी मांथ कोई नी, कदै कैवतां कंची। फलाणै नै दियोड़ी है, मंगावणी पड़सी।

एक दिन, गोमदरामजी, पाटे माथै बैठा, आई वात कर रया हा। इत्तौ में, रुघ्यौ बोलियो-इसा ई क्या सगा-सोई जिकौ कोटड़ी को देवैनी। क्या कोटड़ी घसीजै है? क्या कोटड़ी रौ कानौ तोड़ लेसां? क्या कोटड़ी लारै ले जावेला? माईत ई, म्हारी-म्हारी करता, अठै ई छोडग्या। आज, म्हारै सागै, कई नै भेजौ, देखां कोकर कंची को देवैनी। वात रा टका लागै है, गोमद भाई।

गोमद, एक जणै नै, दादैं रै सागै कर दियो । दादैं, ले ठाकुरजी रै नांवर जाय खटकियो । जै रामजी री कीनी अर चाधी भांगी । सागी ई दरकाऊ उथळौ मिलियो-मुनीमजी चौवटै गयोड़ा है ।

‘कदसीक आसी ?’

‘आ कूण जाणै ।’

‘भला माणसां ! कूंची री खातर क्या नित-नित गोता घाली हौ ? म्हारै फोड़ा पड़ रया है ।’

‘फोड़ा तो पड़ता ई होवैला । मुनीमजी नै आय जावण दी । चाधी पूगाय देसां, थे भलाई सिधायौ ।’

‘हूँ, अठै ई बैठी हूँ । इयै मिस, मुनीमजी रा दरसण तो हुय जावेला ।

‘मरजी थारी’

‘सेठसा किठै बिराजै है ?’

‘वे क्या करैला ?’

‘मालकां ! थे, वानैं, म्हारै आयां री, खड़क तो पूगाय दी ।

इत्तैई, सेठ सावरी बग्घी री घंटी सुणीजी । दादैं, जै रामजी री कीनी । सेठाई पाछी जै रामजी री कर’र पूछियो-बोलौ, कांकर आवणौ हुयौ ?

‘गोमदरामजी री बाई रौ व्यांव है । आपरी कोटड़ी री कूंची मंगाई है ।’

‘खुसी सूं ले जावौ । वारी’ज कोटड़ी है । पण थोड़ा ठेरौ, मुनीमजी नै आय जावण दी ।’

‘मालकां ! मोकळा दिन फिरतां हुयग्या । आजतौ, आप, कांकर ई कर’र चाधी दरायई देवौ तो ठीक रैवै ।’

घणा दिनां सं फिरौं हौं अर चाधी को मिली नी ?

अवै ई किरपा कराय दी तो घणी आछी, मोटां सिरदारं !

सेठ सा, फट ई, सईस नै, चात्री लावण रौ कैयौ । मिनटां में ई,  
चात्री आयगी । दादैं लाय'र गोमदरामजी नै सांपदी ।

कदे-कदे, पोतौ अड़ी करतौ जद, दादो बैनै, सागै टोर लांवतौ ।  
चाक बाळा लाड सं बैनै, दुपारौ देवता । घर जाती वेळा थोड़ी मीठौ-चूठौ  
अर टाबरां रा उतारु गाभा देवता ।

आज वै बात नै मोकळा बरस हुयग्या । दादौ अर दादैं रा साईना,  
सगळे सरगापुर सिधार ग्या । पण, हाल ई, जद हरिजन आंदोळण री  
वातां छिडै, जद, रुखै दादैं रै मीठै मेळरी चरचा चलियां विना को रैवैनी ।



## श्रीगोपाल ओझा

श्रीगोपाल सांठां सूं ऊपर हा पण कड़क पचासावाळां जिंसी ही; सांवळो वरण, धोळा केस, फूल गुलाबिया पागड़ी लिलाड़ माथे केसर री टीकी, आंख्यां बडी चस्में सूं ढकियोड़ी, जाडा भंवाण, टिरियोडै कांता में मुरक्यां, ऊजळो चोळो, खांधे डुपटो, गळें में मूंगियां री माळा, बगल में टीपणो, मीं पोतांवाळी ऊजळी धोती, हाथ में जाडो गेडियो अर पगां में पंजाबी पगरखी ।

इयां री बिरत बडी ही अर बडो ई हो सेठां-सहूकारां में मान । एक तो औस्था में बडा, फेर पद में, जिणसूं, सगळे इयां नै पगोलागणा किया करता हा ।

श्रीगोपालजी ओम्हा हा ।

बिरत रें घरां में थाळी बाजतै ई, ओम्हा जी नै तेडो आंवतो । ओम्हाजी आय'र टावर री वेळा लेंवता । भाई-बिरादरी, गळी-गुवाड़ अर मितर बधाई देवण सारु भेळा होंवता; घर-घणी नै पौसावतो तो सगळां नै एक-एक नारेळ देंवतो ।

श्रीगोपालजी जोतसी हा ।

टावरां री, जिन्दोयां पड़ती, तो ओम्हाजी री चायना होंवती मिरग-छाला, डंड, कोपीन, खडाऊ अर होमरी सामगरी, एक दिन पैला आय'र ओम्हाजी मंडाय जांवता । जिन्दोईवाळें दिन, देवताधारी भेट अर दाना सू परवार, गिस्ती आपरी सरधा सारु ओम्हाजी री सेवा करतो । उण दिन ओम्हाजी टावर रें कान में गायत्री मितर सुणांवता । कैवता-देख वेटा, अत्रै तूं जिन्दोईदाण हुबग्यो है, रोजीना गायत्री री जप करे, सिंध्या करे, बिल में मूते मती अर गाय नै चंघती नै बताये मती ।

श्रीगोपालजी दीक्षा-गुरु हा ।

बियां रै सावा में ओम्नाजी नै सांस लेवण नै ई बखत को मिळती हीनी । एक रौ तेड़ौ, बीजै रौ तेड़ौ, तेड़ै ऊपर तेड़ौ । ओम्नाजी फाया-फोंटा हुए जांवता । पण कमाई ई इण मौकै मौकळी होंवती जिणसूं कसर निकळ जांवती । हरेक घर सूं [५०] सूं कम तौ क्या मिळता, वेसी भलाई मिळी । मन्ना अर जनोठण ओणरी रसोई में ओम्नाजी रै घरवाळा मदत दरांवता ।

जिन्दोई अर बियां ऊपर कई जजमान रौ हाथ तंग होंवतौ तौ ओम्नाजी चीठी लिखाय'र अथवा अडाणगत माथै रुपिया ओधार तोल देंवता वैरौ काम कढ़ाय'र, तीजै कान ठा को पड़ण देंवतानी ।

ओम्नाजी आडी वेळा रा मदतगार हा ।

परणै में ओम्नाजी री गरज रेंवती, तौ मरणै में ई बां बिना काम क चलतौ हीनी । प्राणी नै आंगण में पसारण सूं लेय'र वारै महीना तांई ओम्नाजी री जरूरत पड़ती रेंवती । इण मौकै ऊपर गरड़ पुराण री भेट तथा रोटी पूरी होवणै सूं गैणा-रूपड़ा रै रूप में ओम्नाजी नै चोखी परापती हुय जांवती ही ।

ओम्ना जी किरत करावणिया अर पुराण वाचक हा ।

परव ऊपर किरत-उपवास री कथात्रो ई ओम्नाजी बांचता अर भेट-पूजापी आपरै धरै ले जांवता ।

कोई भागवत सुण'र ती कोई बेतरणी कर'र ओम्नाजी नै पैरावणी पैरांवता । पैरावणी में गैणा-रूपड़ा अर भेट रा रुपिया मोकळा मिळता ।

ओम्नाजी आळा कमाऊ हा ।

सेठां-साहूकारां रै घररी ओम्नाजी रै चोखी पैदा ही, मरणै-परणै ऊपर । गऊदान ई मोकळा मिळता हा, कई नगद तौ कई सरूप । ओम्नाजी रै घर में २-३ गायां ती सासती रेंवती ईज । दूईजती जितै तौ ओम्नाजी चाटौ-चारौ देंवता रेंवता । अइण्या री खेवट वे करता को हानी ।

ओम्नाजी स्वार्थी हा ।

ओम्भाजी रे घर में धन री मटक्यां भरी रेंवती ही । गैणा-गांठा ई मोकळा हा । कमाई-कजाई ई मोकळी ही । लैण-द्रेण अर खंधी-किसती री कमाई वे मोकळी करता हा । दीपती आसामी सूं (१००) लारै (१०) अर अणदीपती सूं (२०) काटता । गैणा-गांठा अर जागा-जमी ऊपर ई रुपिया ओधार तोलता अर रुपयो सईकडौ व्याज लेंवता ।

ओम्भाजी बौरा हा ।

ओम्भाजी ऊपर राम राजी हा, ती ई लोभ को छूट ती हीनी । रोज कचेड़ी की फेरी देंवता ईज; कई ऊपर दाबी, कई ऊपर कुड़की, ती कई रै घर री लीलामी करावण नै । अदालत रा चपरासी अर अहलकारां री भेट-पूजा करताई रेंवता हा ।

ओम्भाजी भागडू हा ।

धन में धन संदोरण रै लोभ में वै सुख, संतोस अर भजन सूं आघा आघा दीड़ता हा । वामण हा फेर ओम्भा, जिकौ कई पाठ-पूजा ती लोभ देखापै करणी ई पड़ती ही । बैसूं बैगौई पिंडी छोडाय'र सेठां-सहूकारां रै घरे पूजा-पाठ करण नै जांवता परा । सेठां नै भगवान री सेवा करण री पुरसत किटै ? ओम्भाजी नै पोख'र, सेवा रौ फळ सोरप सूं परापत कर लेंवता । ओम्भाजी रै भाग री क्या कैणी । सेवा अर दिरब दोनू मिळ जांवता ।

ओम्भाजी लोभी अर भंभटी हा ।

ओम्भाजी परलोक सिधारग्या; पइसां री पोट लारै ई छौड़ग्या, छिदामई लारै को लीवीनी ।

सैंसार में म्त्राथ रौ ई नाती है । इण वास्ते, म्त्राथ सूं ई, मोकै-डोकै पांरी याद आई जावै है ।

## सिरदार रंगारो

एक ऊंडी-ऊंडी गूंभारियौ । जिकै मैं एक मुसलमान परवार-रैथै । हवा अर चानणै रौ परवेस वैमें नहीं-रै समान । ऊजाळै मैं सगळै बार चौक मैं मांचां ऊपर सूवै । सियाळै मैं तो वारी गुफा मैं सीरौ संचार नहीं । चौमासै मैं छांट-छंडकै री वेळा मैं वां लाया मैं कोजी बीतती; घडीक गूंभारियै मैं तो घडीक बार । गूंभारियै मैं इसौ अमूजौ जिकौ पंखै सूं हवा लेंवते-लेंवते हाथ उतर देवण लागतौ ।

इण परवार मैं सै मिळाय'र पांच प्राणी हाः घूडौ सुलतान, वैरी लुगाई-लिछमी, वडौ वेटी करीम अर वैरी बहू अर पांचवौ सिरदार । एक राख राखी ही बकरी जिकै रौ दूध बारी-बट्टै सगळां नै मिळतौ । सिरदार, दिसा-फरागत जांवतौ जणै बकरी नै चराय-पाय लांवतौ ।

दिनूगै बजू कर'र सगळै नमाज पढ़ता । फेर एक जणी पीसणै-पोवणै मैं लागती अर बीजा सगळै कपड़ा रंगण मैं । करीम हौ पैलवान, वौ अखाडै सूं मौडौ आंवतौ । आंवतै ई वौई काम में जुट-जांवतौ ।

आंवता-जांवता गळी-गुवाड़ रा लोग थोड़ा पग टांभता वां सूं ऊभा-ऊभाई वातां कर'र टुर जांवता ।

औ परवार मेळू अर मस्त हौ ।

सरदार हौ बरस गिटणौ अर टैणी । रंग पक्की, तुक्कल अर दाडी मुंडायोडी । छोरां मैं छोरी अर बडां मैं बडौ । सगळां मैं इसौ घुळियौ-मिळियौ जाणै वां सांईनीईज सैतरी माख्यां छतै सूं चिपयोडी रैथै ज्यौं सगळै वै सूं चिपिया रैथता । वौ सगळां नै राजी राखतौ ।



गूभारिये खनेई पाडोसी री देलान चौकी ही। रोटी-वाटी-खायर सिरदार अर बेरी मंडळी उठे जाय जमती। वी सगळ्यां नै भूतां, परियां, दूख-टामण अर सैर री गषां सुणवती। रुपाळ-तमासां अर रमतां रा गीत ई गाथ'र सुणवती-चोमासा लासयां। बेरी फंड में भिमरी घोळियोडी ही। कदैई जचती ती तास रमण लागता कदैई दिल्ली।

सिरदार मीठी अर मंडळीवाज ही।

कदैई वी संगळ्यां सागै सैल करण नै निकळ जांवती। वै वेळा माथे ऊपर कामदार चूणियोडी टोपी, चूणियोडी चोळी, लांगदार धोती अर खांधे ऊपर फळ्यां गूथियोडी गमछी राखती। कपडां में सुगंद ई लगावती।

सादी तीन-चार घजियां परवारवाळा सगळें काम में लाग जांवता। सै जीलगाय'र, अंग तोड'र काम करता। सादी छय वजी करीम अखाडे अर सिरदार वाल मंडळी सागै बकरी चरावण-पावण दुर जांवती।

सिज्यां नै सगळें सागै ई नमाज पढता। करीम री बहू रसोई चाढ़ती अर खने बेठी-बैरी सासू लिछमी सिख्या अर सायता देंवती। इण वेळा फेर वाल-मंडळी आय जुटती। सै मन बैलांवता। इतै ई रसोई बण जांवती। मंडळी बरखास्त होंवती। मिनख पैला अर लुगायां पळै जीमती।

हमें, साइना आय जमता। अकास में अठीनै चंदणमा मुळकतौ, उठीनै अै किलोल करता। आधी रात तांई तरै-तरै रा खेल खेलता :—

- (१) कान कुचरियो भू भं भरियो।
- (२) मियांजी-मियांजी घोड़ी बेचौगे ? किता टकै ? लाख टकै।
- (३) अंबर घोळियो।
- (४) चिलम-चिलम धूताड़ियो।

सिरदार खेलार अर हंसोड़ ही। सिरदार आप रै वाप नै 'बाजी' केंवती अर इयां ई मंडळीवाळा। वै बाजी सूं, गैडा, ताबीज, अर भाड़ा सील लिया हा।

सिरदार रै खनै लोग बिच्छू, फैंटोई, चाखरी भाई लगवावण  
आंवता । पांच-सात जणा तौ उभाई रैवता ।

सिरदार भाड़ागर हौ ।

घात री घात में बरस धीत गया । सिरदार अथै दुपगौ सू चीपगौ  
हुयग्यौ । पेट खुल ग्यौ । दो चेटा अर एक चेटी हुयगी । माईत नुदा री दरगा में  
जाय पूगा । बडी भाई करीम अजमेर गयी परी । धैरै माथै उपर गिस्ती रौ  
भार आय पड़ियौ । अथै धैने पैला सं-घणौ खाटणौ पड़तौ हौ ।

आपरे हायां सू लोग-लुगायां अर टावरां रा कपड़ा रंगतौ । लुगायां रा  
ओढ़णा, धोत्यां—पिरोजिया, केसरिया, कसंबल, चंनणियां, मोतिया, कपूरिया,  
फूल गुलाबिया, बलदेसाही अर धनसवाण रंगतौ । मी हवेजी री चूनड़ी अर  
धीजी भांत रा वंधेजा बांधतौ ।

मिनखां रा पाग-पेचा अर चीर ई इणी रंगा रा रंग तौ । फागण में  
टावरां रा चोळा माथै छांटणा छांटतौ अर लुगायां री धोती छांटणैदा  
फागणिया रंगतौ । मिनख इण मईने में पाग, डुपटा अर चोळा पतंगिया  
रंगांवता ।

सिरदार कारीगर हौ ।

बौ सगळां में इयां घुल-मिल गयो हौ जाणै दूध में भिसरी । लोरु  
लखाईज तौई कोयनी ।

हमें धैने रमणै-फिरणै नै टैम को लाधती नी । पण मंडळीराळां री  
मिनघार अर मिन तौ राखणी ई पड़तौ हौ ।

रातनै थोड़ी फुरसत लाधती । जणै संगळयां रै सागै गपां मारतौ ।  
गुटकती अर रागोलिया करतौ ।

तिवार-टांकडां उपर सिरदार रा टावर लाफसी थोण पुरसाय ले  
जांवता ।

सिरदार सगळां री तन्नू दण बैठौ हौ ।

बाजी जवानी में ई अठे आयग्या हा । इयां ने अठे बसियां ने आधे सट्की हुयग्यो हा ।

पण ममें रँ सागै-मागै, भेळ-भौवत रँ गुणकारी इमरत में घैर विरोध रँ थिम घुलण लागग्यो ।

भारत री बंटवाड़ी होय'र पाकिस्तान नवो बण ग्यो । मीठी निजर अर मीठी भेळ खारी हुयण लागग्यो । आख्यां सूं हेतरी जागा जैर बरसण लागग्यो । घैर, सूग, हिंसा री भायना सूं भिनस राखस बणग्या ।

इयैरी पैल मियां भाइयां धीधी । मसीतां अर घरां में गुप्त सभावां होयण लागी । नित नवी-नवी गप्पां उड़ती के काल रातने मुसलमान फलाणै हिन्द्यां रँ मौले ऊपर जाय चढ़िया ती परसूं फलाणै । मूंडा जिताई घातां । ह्या में भँ छायाग्यो । नवा-नवा उणियारा अर नवा नवा गुल खिलण लागी । कई जागा ती माथा फूटग्या । हिंसा रँ घातक जैर री असर फैलणवाळी बेमारी दाई सगळी जागा फैलग्यो । चैरां माथै ह्यांथां उडण लागी । एकबीजे ने सक अर बे विसवास री निजर सूं जोषण लागी ।

सिरदार इण लैर में वेयग्यो । वैई किरडै दाई रंग बदलियो । घैरै घरै मियांमंडळी भेळी होवण लागी । घैरी मंडळीवाळां रँ नाक नेई अबै सिरदार रँ घर रँ आजू-बाजू सकरी-सडियोडी वास आवण लागी । प्यारा खारा हुयग्या ।

सिरदार री आख्यां सूं ई बदळियोडा रंग-ढंग लुकिया को रयानी । अबै मियांमंडळी घैरी घरै भेळी नहीं होय'र जंगळ में किणी गुप्त जागा जुटण लागी ।

घैरै घरै लोगां तिजाव री बोतलां पडी देखी । अबै बाई सागी तन्नू सिरदार परायो बण'र आख्यां में रडकण लाग ग्यो ।

समंदर में रेवणी अर मगरमच्छ सं घैर कांकर निभै । छेकड़ सिरदार रा पग छूट ग्या ।

एक दिन वी आपरी आधै सइकैवाली मीठी मैरबान वस्ती अर गूंभारियै रै मोह नै त्याग'र चंपत बणग्यौ ।

पोलस नै बुलाय'र गूंभारियै रौ तालौ तोडायौ गयौ । केई फूट फेलावण वाली चीक्यां मिली जिए सूं लोकां रौ सक पक्कौ हुयग्यौ ।

धीरै-धीरै काळ चक्कर घूमियौ । आपसी मेळ-जोळ री चरचावां चलण लागी । उखाडियोडा पाछा जमण लागी ।

पण म्हारौ सिरदार गयौ जिकौ आवडौ ई गयौ । वीरै गूंभारियै रै आगै सूं बैवती बेळा हालई तारली मीठी वात्यांरी याद वैर विरोध अर विछोडै रै गैरै अंधारै-नै चीर'र चित्त नै चटपट चेतन कर'र छाई माई हुय जावै है ।

## गनी ठंठारी

ऊनाठै री रूत-लाय पडे तौ इसी कै मत पूछौ । जी चाबै, खाय-पीलिया  
अबै आराम । उसी धू दुपारै री बेळा, कांधै-दो बोरयां लियोडो, एक में नवा  
अबोट अर बीजी में भागा-टूटा अर जूना-पुराणा पीतळ, तांबै, कांसै रा  
बरतन भरियां, गनी ठंठारी म्हारी गळी में आंवतौ । 'पीतळ, तांबै, कांसी रा  
नवा बरतण ले लौ, जूना भागा-टूटा बदळाय लौ' री आवाज सुण'र लुगायां  
जाण जाती कै गनी बाबौ आयौ है । आप आपरी-जरूरत माफक लुगायां काई  
भागा-टूटा बरतण देयर बदळै में नवा लेंवती तौ काई उगांरा दाम ले लेती ।  
काई जूना बरतणां माय सूं छोट्टर जोइजता बरतण सस्ती-कीमत में लेती ।  
गनीबाबौ सारीतरै रौ सवदी पटाय लेती, कई नै निरा'सर नाराज को  
करतौनी ।

गनी बाबौ सैणौ-दानौ बोपारी हो ।

बाबै हज कीयोड़ी ही । पूरौ खुदा परस्त हौ । कूड़-कपट आटे में लूण  
घालै जित्तौई बरत तौ । सगळा नै खरी सला देती । गायकां नै टग खावण री  
नीयत को राखतौ नी । आरै बाजबी नकैरै साथै गायकां रै भलाई री ई ध्यान  
राखतौ ।

घणी-वार लुगायां नै कैतौ, बेक्यां घर गिस्ती री ध्यान राखौ । अण  
जोइजता बरतण मोल लेर अण्णतौ खरचौ मती करौ । भिनख लाई दिनुंगे सं  
सिंज्या तांई खटै है, जणै पइसौ फमावै है । पइसा आछारै लागै कोयनी ।

काई जूना बरतणारै बदळै नवां लेंवती तौ गनी कैती बाई ! बरतण तौ  
हाल चोखा पडिया है-भागा टूटा कोयनी । पळे क्यौं पगरखी में पग कटावै ?  
क्यौं काम में आवै जिसां नै आशी कीमत में बेचे है । तूं चाबै तौ ई इयां नै  
नवां जिसा कर लाऊं । म्हारी मैनतरा थोड़ा पइसा देणा पडेला । कई नै कैती,

बेटी तू कैवै हूँ नी, इसा मोकळा वरतण घर में है, फेर नवा क्यों मोल ले'र फालतू पइसा गमावै है । मिनख कमाई दोरी घणी करै है अर थे बिना समभियां खरच कर नाखी । हैसाव करण में गडबड गोटाळी को करती हौनी । गळी री लुगायां नै घेरी इमानदारी ऊपर भरोसो हौ । बावो नेक नीयत वाली हौ ।

बावै री कद डिंगणो, आंख्यां छोटी, रंग गऊं वरणो, छोटी धौळी-दाडी, कान टिरियोडा, मूंड्रा आंगे सूं थोछी करायोडी लारै सूं लंबी; माथै ऊपर छोटी फाटो-पुराणो फेंटीं, चोळो पैरियोडो जिक्के ऊपर परसीएरा स्याळ, गिरियां सूं थोड़ी ऊंची-ऊंची सब भरियोड़ी सुंधण पगां में देसी जूती-राखती । ऊंवर साठ सूं ऊंची ही पण तीई कड़क चोखी ही, तांत करारी ही । सदा हंस मुख रैवती । पकी—मैनती ही ।

घर गिस्ती री जरूरत रै सगळा वरतना रा उण खनै नमूना रैता : गूणियो, तपेली, थाळी, कटोरा, कटोर्यां, लोटा, टोपिया, गिलास, कटोरदान, पाळी, कुड्छी बगैरै ।

बावो जूनां वरतणां रै वदळै नवा देंवता । भागा-टूटा वरतण सस्ती कीमत में ले लेती ।

कई कई नै पइसै री मौळ रै कारण जूना धींगड, माईतां रै हाथ रा वरतण बेच'र घर खर्च सारू दाम खड़ा करना होंवता, तो बावो, बे वरतण आधी कीमत में ले लेंवती । एक जाणती, म्हारै गुजारै रा पइसा आयग्या, धीजो जाणती, म्हारै घर में नफो ह्यो । दोनूरी मिळी जुळी जुगती चलती ।

बावो मेळू अर पक्को बापारी हौ ।

अत्रै गनी परमात्मारि दरगा में पूग ग्यो, पण हालतांई गळी गुवाड़-वाळा बैरी लायकी'र नेक—नीयती नै भूला कोयनी । बैरी मीठी चाद बणियोड़ी है ।

## मध्घो फेरीवाळो

मध्घो ह्यो फेरीवाळो । लाई गरीब अर मैनती हो । धू दुपारै री बरसती लाय में, झांघां ऊपर दो चोरयां में, काचरयां फळयां, फोकळिया, खेलरा, सांगरयां, कैर अर अमचूर भरी राखती । गळी-गुवाइ में थडती ई रागोलिया करती—

काचरयां लोजी काचरयां लो  
 म्हारारे गायकजी थे काचरयां ई लो  
 सांगरयां लोजी सांगरयां लो  
 म्हारा रे गायकजी थे सांगरयां ई लो ।  
 जिसी माल उसी ई गीत ।

कई नै बाबाजी कई नै काकाजी, कई नै मामाजी, कई नै भाईजी कैर, सगळां नै अपणापो देखांवतो । लुगायां नै दादीजी, बडियाजी, मामाजी, बाईजी अर भोजाईजी कैर नैडो पडती ।

कई रे माल लेवण री थोड्डी जचती तो मध्घो, बैनै आ कैर पइसां री फिकर तो कीया मतीना, मोडा बैगा, हाथ घसू हुये जणैई दे दिया, राजी कर लेंवतो । कैवतो इसो सस्ती सबदो भळै मिळैला कोयनी । घर बैठै गिंगा आई है दो पइसा कसरौ सबदो है । मनै तो थोड्डी नफैसं माल लूटावणो है माल खलास करणो है जणै नोरा काडूं हूं ।

काई कैती-बाला मध्घा । सांगरयां बोदी अर कोरा खोखा है । कूण पइसा धूइ में नाखे ।

जणै हसर उथळो देवतो—भूवाजी । माल छांट'र लेलो । माल सस्तो बेचूं हूं । जणै थेइ कसर काढी हो । हूं रुपियै री डौड सेर बेचूं हूं । बाजार में डौड रुपयैरी सेर दोरी मिळैला । कई इयै वातनै सोचो ह्यो'क ?

ऊपर सं बछ-बारस, नागडा-पांच्यां अर आसरा टांकडा आत्रै हे । घर में सांगरयां होसी तो हाती-हाती को करणी पड़ीनी । देखलो साय ! हूं तो थारै फायदै अर सवीतैरी वात कैरूं हूं । लैणी नहीं लैणी तो थारै सारु हे ।

काइ कैवती-अमचूर तो काळी दराय हे । साग रौ रंग बिगड़ जात्रै, कूण लेवै, आधी बाळ आघड़ी ई ।

जणै कैवती-अमचूर नै ऊनै पाणी में छोड़'र देखो तो खरी । लाल फसंबल रंग देसी । थानै काळो फूटरौ क्या देखणी हे । साग में खटाई परी चोखी लाग जासी । इत्ती सस्ती अमचूर मिळण नै किठै पड़ी हे । चौवटे में रुपियै सेर मसां सं मिळसी । थारी खुसी, पगरखी में पग कटावणी हुवै तो भलाई कटावो । म्हारौ माल तो उभोई को रैवैनी ।

इयां वारौ जीं जमाय'र माल बेच देंवतो । काइ ओधार राखती तो काइ नगद पइसा बटाय देंवती ।

वात आही कै मध्या पसारयां खनै सं जूनौ-बीदौ मात्र पइसां में ले आवतौ अर चोखा दाम खड़ा कर लेतो । पसारी जाणता कूटळौ निकळियो मध्या जाणतौ कूटळै मांय सं रोटी निकळी । दोनू रै लाभ रौ सवदौ हौ । बाइ बत्तीसी तो बीरौ छत्तीसी ।

मध्या पसारयां रौ कमाऊ बेटां हौ ।

मधो टावर हौ जणै ई मां मरगी ही । मामै रै घर छोटे सं बडी हुयो । मामें मामी नै ई वै तो मां बाप जाणिया ।

मध्या रंग-रूप रौ काळो, आंख्यां कोचरी दाई, नाक तीखी, भंवारा काजळ री पतळी रेख दाइ, सरीर खाखड़ियै दाई, धोती री जागा काठै लट्टै रौ पंछियो पैरियोडी, टाट उवाड़ी । कणै ई पगां में खेटर फट-फट करता तो कणै ई पगो उभराणी । माथै, माथै कळरी कतरणी फेरायोड़ी, दाड़ी रा कन्ना च्यार-च्यार आंगळ आंतरै, कंवर कुड़ियोडी, लिलाइ माथै सं परसीणै रा टोपा पड़ी ।



गमझी घोरयां रे वार कर लपेटियोड़ीं राखती। तावडीं कित्ती ई  
प्रांख्या काढीं, खीरा उझळीं, ऊपर भलाईं टाट तपो अर नीचे पग बळीं, पण,  
ओ डाकींतीं तो नेम सूं गळी—गुवाइ अर चौक मालां में फेरी फिरण में धू  
चूकें ती चूकती ।

मघौ अववूत हों ।

गिसत्यां नै घर बैठे सस्ती माल बेचणियो, मघ्ये छाडै बीजौ कोई  
को हानी ।

मघौ करडीं नेमी अर खरो मजूर हो ।

घणी मेनत करणिये नै भूख ई घणी लागै । मघ्यो, चार-पांच बाजरी  
रा सोगरा, लूण-मिरचारी चटणी सूं पधराय लेंवतौ । बिरखा-पाणी हुयोड़ी  
होंवतौ अर फळी, खाखड़ी, टींडसी अर लोइया घणा सस्ता मिळता तो बिचां  
रौ साग बणाय लेंवतौ ।

लाई अंबर घणी ओढ्यो लायो । ४०-४२ में तो परलोक ई पूग्यो ।  
मघ्ये विना कृण बडंग मारै—

काचरयां लौजी काचरयां लौ

म्हारा रे गायकजी थे काचरयां ई लौ

सांगरयां लौजी सांगरयां लौ, म्हारा रे गायकजीं थे सांगरयां ई लौ

घर बैठे सूका साग सांगरयां, फळयां, फोफळिस्थां, काचरयां, जोयीजे  
जणे मघ्ये रौ घाटी घणौ अखरै ।

घारे । मरदाना मघ्या । वा ।

## भीलियो खवास

बुध, सुक्कर अर अदीतवार-। घडा-बूढा, टावर, सगळा कई नै आंख्या फाड़ियै उडीकै । दिनूगै री आठ साढ़ी-आठरी वेळा । दिसा-फरागत सूं सैन निपटियोड़ा । केई चीकी ती केई पाटै माथै बैठा । मजै सूं बातां करै अर टेम टालै ।

इत्तै ई में एक काळी दराय ठिंगणी मूरती मूंडै माथै सीवळ रा बण, तुक्की-मुक्की दाड़ी, आंख्यां ऊपर चसमौ लगायोडौ जिकै री एक डांडी सावत अर बीजी री जागा डोरौ जिकौ एक कान रै बारकर लपेटियोडौ, माथै, माथै चीगटी बिदरंगी पागड़ी, तौई टाट उघाड़ी, गोडां साईनी ऊंची-ऊंची धोती, बगल में खाल री रछाणी, फाटौ मैलौ चोळी, खांधै माथै मैलौ फाटौ गमछौ, पगां में खांसड़ा अर हाथ में लियोडै गेडियै नै, खट-खट टेकतौ, पग दचकांवतौ, भीलियो वाचौ म्हारी गळी में आंवतौ ।

भीलियो खवास ही ।

भीलियै, वाचै री रछाणी में दो-तीन देसी पाछणा नैरणी, सिल्ली, एक खाल री टुकड़ी, देसी कतरणी, कळ री कतरणी, मूंडी देखण री जूनौ धूंधळौ काच अर देसी कांगसियो रैवतौ । पाछणा रा नांव, टावरां नै राजी राखण सारु, भीलियै वाचै मिसरी रौ पाछणौ, खांड री पाछणौ कड़ाय राखिया हा ।

वाचौ पैली पोत टावरां री संवार करती । टावर वाचै सूं डर'र भेळा-भेळा हांवता । माईत टावरां नै खोळै में लेय'र बैठता । एक सौ वाचैरौ पाछणौ दोरौ चलती बीजौ हाथ धूजती । जागा-जागा टावरां रै माथै में टांचा पड़ जांवता । टावर भेळौ-भेळौ हुवै । जणै माईत टावरं री हीमत बंधावण सारु बैरे मगरां में धापी देय'र कँवता-सूरवीर है, भीलै रा सड़का ती सूरु ई

सैवै । बाबू, हस'र कैवतौ—रो ना बेटा ! लै, देख अक्कलै मिसरी री पाछणी काढ़ूं हूँ । औ सोरी चलसी । अर देख बेटा ! तनै 'चल मेरी डमकी डमाक डम किसका भीटिया किसका तम वाली काणी कैसूं । तू तौ सैणौ घणौ ईज है । लै—आलै, संवार बणगी, इयां कैय'र रीभांवौ रैवतौ । इत्तै ऊपर ई कोई टावर ताना बाजी करतौ जणै माईत री निजर बंचाय'र, बाबू बैरै माथै में एक हळकै ठोलै रौ कचीइ देवतौ अर आंख्यां काढ़तौ । टावर भैरै मारियौ बोलौ-बोलौ हुय जांवतौ ।

भीलियौ बाबू टावरां री गुरु हौ ।

बौ टावरां रै माथै ऊपर लंबी चोटी अर चोटी रै नीचे दो गळियौं अर देवता रै नांव री लटी राख'र कळरी कतरणी फेर देवतौ । पछै आगलै पासौ पाछणै सूं चूलौ बणाय देवतौ जिकी खिजमत कयीजती । कोई छोरौ कैवतौ-म्हारी दादी पट्टा राखण रौ कयौ है, जणै वैनै बुचकार'र कैवतौ-ना बेटा ! देढ़ांवाळा बुग्घा कुण रखावै, कोजा लागै । आपानै तौ खिजमत करावणी, गळी-लटी रखावणी अर फंदियौ गूंथावणौ जोयीजै ।

टावरां री हरजामत सूं निपट'र, बडा-बूढ़ां री करतौ ।

भीळियौ बि तेसरी हौ ।

बारै मास, मुफ्त में, बिरतवाळां री हजामत बणांवतौ ।

औसर-नुखतै, मरणै-परणै अर मंगलीक टांकडां माथै भीळियै रै घर भररा बिरतवाळां रै घरै जीमता अर मौकळौ पुरसाय'र लांवता । साध, आगरणी, भाईपै, भंडा, जिन्दोई, व्यांव अर मरणै माथै वैरी घणी-घणी पृष्ट होंवती अर चोखी नेगचारी भिळतौ ।

बिरतवाळा परदेस सूं आंवता जणै भीळियै बावै नै चोळौ, धोती अर पाग देवता । बारै महीनां में धीजौ कपडौ ई देवता ।

भीळियै री बहू बिरत रै घरां में लुगायां रा माथा गूंथण जांवती । टांकडै-नुखतै माथै आंठा बासण. दोनू जणा मांजता । बासण लायां नै भाल री भाल मांजणा पड़ता । घरां में गौळी घालनी पड़ती ।

माथै गूथाई रै वदळै में बिरतवाळा बाबै री बहू नै कई देवता-लेंवता रेंवता । इयै सूं परवार मंगळीक टांकडां ऊपर घोळरा, नारेळ-टका ई इयै नै मिळता ।

इण तरै भीळियै बाबै रै परवार रौ बिरतवाळां रै घरां सू गुजारी होवतौ ।

लाई बाबै नै बिरत रै घरां रै काम सूं फुरसत ई का मिळती हीनीं । कणै कई रौ तेड़ी, तौ कणै कई रौ ।

वियां अर नुखतां माथै बाबौ घर री निगराणी राखतौ । बासण-घरतण, चीज-वस्त गुमणै पांवती नही ।

कदै ई कोई बौदै में गैणौ-गांठौ खोलर भूल जांवती तौ बाबौ ठावौ संभळाय'र दे देवतौ ।

भीलियौ बाबौ डंभक अर खरौ मिनख हौ ।

भौकै-टौकै, घरवाळा बैरी सलासूत लेंवता हा । कारू-कमीण समझ'र बै रै सागै ओछ्यौ-हळको बौवार को करता हानी ।

भीलियै बाबै रौ, बिरत रै घरां में माईतां दाई काण-कायदौ हौ ।

अबै किठै वा बात ? जमानौ ई वदळ ग्यौ । बिरत रौ बंधाण दीलौ पड़ ग्यौ । अबै तौ काम थोड़ी करणौ पण टका बजाय'र लेंवणा । बिरत रौ नाई मिळणौ ई ओखौ हुयरयौ है । अबै तौ कारू-कमीण कैवै है कै म्हांनै बिरत पौसावै ई कोयनी ।

मरणै-परणै भीळियै बाबै रीं याद आयां बिना रैवै कोयनी । बैरौ घाटौ अखरै । छेकड़ उभोड़ा, आडा तौ हुवै'क ?

समाज रौ किसौ चोखौ बंधाण हौ । सैं आप-आप रौ काम करता अर आपरी जागा पूछीजता-पूजीजता । ऊंच-नीच री गिंदी भावना को हीनी ।

## हरदास दहीवाळी

अगूण पासी उजास होअण लागतो जणै सोमणी कडक बोली में सुणीजतो—‘दही चवको-दही चवको’ । अथै ती टावर-टीवर हरदास री घोली ओठखर, नाचण कूडण लागता अर बैगी लावण खातर अड्डी करण लागता ।

हरदास दहीवाळी हो ।

आधी गली में अवाज मारियोडी इसी जाण पडती जाणै म्हांरी ई गळी में ई मारी होवै । बडा-चूडा, सगळे उडीक लगायां उभा रेंवता । जेज होंवती जोय’र उथपण लागता । पण टावरां रें सौ जावक ई खटावण को होंवती हीनी । लागता पग पीटण, कर लेंवता भरभोलियै दाई मूंडो ।

वानै राजीकरण सारू घरवाळा कैवता—‘आधी ओ हरदासजी बैगा आधी; मनियै नै दही देवी । इत्तैई रंग उडियोडी मैली पागडी पैरियां हजामत घघियोडी, खांधै ऊपर एक मैलौ-फाटो गमछौ, जिक्के ऊपर भावोलियो धरियोडी, एक हाथ में जाडो गेडियो लियां, गोडा साईनो मैलौ पंछियो पैरिया अर पगां में जाडा जूत धारण कियां हरदास आर्या ई-आयोई कैवतो आय धमकतो ।

भाओलियो एफ पीतल री थाली सं, दकियोडी रेंवतो एक पासी बाट अर बीजै पासी धान रेंवतो । धान रें मांय धडो करण सारू बडा छोटा गड्डा रेंवता । वारी वारी सगळां नै दही तौल’र देंवतो । टावर चंगी अर धरकी लेंवता अर उठे उभा-उभाई चांट जांवता । फेर हाथ पसार देवता । माईत पालता, जद हरदास कैवतो—बालक बादसा है, ऐ ती इयांई करसी ।

हरदास जरणावाळी हो ।

एह गळी सूं बीजी, बीजी सूं तीजी, इणी तैर घणी सारी गळियां में घूम'र ५-७ भाओलिया वेच लेंवती । घरै आंत्रती जणै थाळी धान अर टकां सूं भरीज जांत्रती ।

हरदास मैनती ही ।

दुपारै, ग्वार फळी-दावड़ी रै साग सूं अर फौगलै रै रायतै में, वाजरी रा सोगरा भोर'र पेट पूजा करती । पछै घंटा-दोय-वंटा तप्पड़ बिछाय'र, लेट लगांवती । पण माछर-माइयां टिकण को देंवतीनी । जद कदेई पंखी करती अर कदेई डुपटी ओढ़ लेंवती । कदेई रसोई सूं निमट'र सिवादास री मां दायत घालण लागती । जणै, थोड़ी ई ताळ में घुर-घुर करण लाग ती ।

हरदास संतोखी ही ।

चार-पांच बजी हरदास भट्टी चेतांत्रती । अगन में धी री छांटौ नाख'र 'धंवकाळी' कैय'र भगती सूं हाथ जोड़ ती । पछै कड़ाई चढांवती । वैमें दूध भरती । मधरी आंच सूं दूध रदीजती । धीरै-धीरै दूध माथै सागीड़ी जाडी थर आय जांवती ।

हरदास कारीगर ही ।

हरदास रै घर में थोड़ी-घणो दही वंचतीई । जिकै सूं तरै तरै रा साग वण जांवता । दई में बेसण घोळ'र कदेई सिवदासरी मां गटा कदेई चीलड़ी, कदेई पतोल कर लेंवती । कदेई गळी मांघ सूं मांगी छाछ मिळ जांवती ती राव अर कट्टी वणाय लेंवती ।

कदेई रोही सूं तोड'र लायोडा कैर-सांगर्यां रौ साग वण जांवती । इयां धाकौ धकती ही ।

घर में टावर टोळी रामजी रौ दीन ही । माठै-मटकै चलती, जदई गाढो गुड़क ती ही ।

मे'री रुत में हरदास, गांव जांवती परी । उडै बैरा पिता पूरची रूत हा । कच्यो टापरियो ही ।

लुगायां-टावरां नैई, वी सागै ले जांवती । सगळे खेत में बुधी सारू काम करता । डीलां सूं मजूरी करता ।

टावरां नै उठै, गायां-भैसा रौ दूध पीवण नै मिळती ।

हरी टांच रोही, हरा-हरा खेत - जियारी आय जांवती । वारै मईना तावण जोगी, धान राखर बाकी वेच देंवती । चोखी रकम खड़ीं हुय जांवती । आ रकम व्यांव-टांकडां में लागती ।

हरदास घर-लोचू हौ ।



## भोळियो डाकोत

छनीवार नै भोळियो म्हारै चोक और गळी रै घरां में चक्कर काटिया करतो । कैयतौ-आज ठाकुरजी रै तिथ चारस, चार छनीवार । फलाणै रै सरीरां सुख, स्याग-भाग अस्ती राखै, खेल बधै, ग्वाडी फलै, अर नैण गोडा निरोंग राखै छनी भगवान ! कथा सूंणौ, तेल'र फेरी घताओ, अन्न दाता ।

कोई छनीछर जीरी कथा सुण'र एक टकौ देंवतौ, तौ कोई वैरै मेलै-काळै लोटै मै मीठौ तेल घालतौ ।

कोई पृछतौ-देखतौ भोळिया, म्हारा बोलतै नांव सू गिरै-गोचर किसान है ? कोई परदेस रेवणियां री दिन-दसा पृछतौ । कोई मांदै तातै रा गिरै गोचर पृछतौ कै कद ताई आछौ होसी ?

भोळियो आंगळ्यां ऊपर मीन, मेख, मिथुन, करक, सिंग गिण'र कई नै मंगळ, राहू, तौ कई नै छनीछरजी री दसा वतांवतौ अर काळी चीजा रौ दान काळा तिल, काळी बकरी, काळी भैंस रौ दान करण रौ कैतौ । कई नै चोखी कमाई रौ, कई नै बैगोई आछौ होशण रौ कैतौ । बिरत सं ई भोळियै रै परवार रौ गुजारी चलतौ ही ।

भोळियो डाकोत अर जोतकी ही ।

मरणै-परणै भोळियो हाथ में लालटैण लेण'र रातरी दो तीन बजी ताई बिरत रै घरां आगै घूमतौ अर घर रै मुखियै नै ऊपर लिखियै मुजब आसीस देंवतौ अर गरीबी सू कैयतौ-हां, सुणाई हुय जावै मां-बाप । भोळियै रा कारज आपई साट सौ । फेरी देंवते-देंवते महीनौ हुयग्यौ है किरपा नाथ ।

जणै पंचायती भेळी होंवती अर भोळियै री बीनती माथै विचार होंवतौ । न्यारी-न्यारी पंचायत्यां सूं बैनै एक मुस्त २१) ३१) सायता, रा भिळता ।



इण तरै मरणे परणै ऊपर रीत गुजब खरन करण सारु धैरे खने एक रकम भेळी हुय जांवती । बिरतवाळो होरण सू धैरी आपरी जान में घणो मान ही ।

भोलियो वड़ी बिरतवाळो हो ।

भोलियो जथा नाथ तथा गुणवाळो हो । घर री घाटी कदे पूरी को होवतीनी । गरीधी सू गुजराण करती । सीदार्ता को हीनी ।

भोलियो मैनती अर सावसवाळो हो ।

वेरी छोटी-छोटी कक्की आंख्यां, टिरियोडा कान, करड़कावरा केस, वधोडा नख हा, डील माथे फाटी-मैलो चोळो, लिलाड माथे चंनण री आड़ गळै में रुद्राखरी माळा, वगल में फाटी-चीगटी टीपणी, खांधे ऊपर मैली-चीगटी कोधळी, एक हाथ में मैलो-काळो लोटो, धीजे में दोटी री लकड़ी अर पगां में फरड़-फरड़ करता खेटर हा ।

श्रीसर-नुखतै, सराव-छमछरी-ऊपर मगळां री जीम लैणै री पळै बैनै ई कंई नेग रै तौर ऊपर दियो जांवती ही ।

मंगळीक मोंकां ऊपर धैरी आरणो असुभ समभियो जांवती हो । घर रै मांय तौ कोई बैनै वडन ई को देंवती होनी । कदेई कोई आपरी गरज स दान-पुन रै नियत बैनै मवोडै रै माय वडन ई देंवता तौई धैरै लारै सू पाणी रा छांटा नाखता; इण वास्ते के फेर इण खुड़पणो रा पग घर में नही पडै । बैसू एक तरै री छूत राखी जांवती ही ।

मळ-मास में भोलियै रै वण-आंवती । इयै मास में सबीतै सुजब एक दिन तौ सगळै वडा-चीलडा, पूडी-कचोळी, कंई मीठो, पापड-खीचिया अर सलावडा तळता ईज । धै दिन डाकौत नै सै तेल अर मौठां री दाळ दान करै । कोई तळियोडी सामगरी ई देवै । इण तरै आज रै दिन भोलियै नै मोकळी-दाळ अर मोकळो तेल मिळ जांवतो ।

बैधृत, धितीपात अर गिरण रै दिन भोलियै रै घणासारा छाया दान आय जांवता, तेल सू भरियोडी कांसी री छिरपली में सोनै री टिकड़ी घाल'र उण में आपरी छियां देख'र दान देंवता ।

भोलिये रै घर में छोटा-मोटा सात जीव हा जिकां री गुजारी बिरत रै घरां सूं चाळती ।

घर में दान में आयोड़ी एक बकरी ही जिण री दूध टावरां अर बूढा नै पांती सर मिळ जांवती ही । टावर वैने रोहो में चराय-पाय लांवता हा ।

लाई डोकरी भोलियी परलोक सिधार ग्यौ । वैरै औसर री खरचो पंचायती सूं मिळ ग्यौ ।

भोलिये री बहू आंख्यां सूं लाचार हुयगी ही तीई जीवी जित्तै वेटे-पोते री खांधौ भाळ'र बिरत रै घरां री फेरी लगांवती रयी । छेकड़ वैने ई सौ चरसूपूग ग्या ।

भोलिये रा वेटा-पोता नेम सं तो नही पण छिड़ियै-बिछड़िये चक्कर लगाय जावै है ।

भोलिये री नांव मिटग्यौ पण बाद को मिटी नी ।

छनीशर रै दिन कणै ई इसी-लखाई जै जाणै वो आंवती ई होसी, अर कानां में बैरा बोल गूंजण लागै-फलाणै रै सरीरां सुख, भाग-सुवाग बधै, छनीदेव रिख्या करै ।



## सीतकी मालाण

एकै पासी च्यार-साढ़ी च्यार रौ अमल होंवतौ अर लुगायां सिज्या री रसोई चाढण री चिंता करण लागती कै इतै ई में कई री मीठी-कड़क घोली आंवती 'चंदलियौ, सांगरयां, कैर, क्वांरपाठौ, बैंगण लौ ए ।'

घर-घर सूं लुगायां चार आय पूछती—

'चंदलियौ क्या भाव ए ?'

'देऊं तो पइसै रौ पाव हूं । ये भेलौ सेर लेवौ तौ एक पइसौ ओछी दिया ।'

'ना बाई, तूं मोंगो देवै है । चौबटे में दो टकां रौ सेर भर हएँ ई गळी में लाया है ।'

'तौ हूं माथै भार-उखणियै फिरूं तौ कई साव नैई फिरूं हूं । पइसौ खण तौ मनैई जोयीजै ।'

'हां बाई ! आ बात तौ बाजव है ।'

'तौ तोल दूं सेर भर ?'

'तोल दे ।'

'ए सीतकी ! सांगरयां कांकर दी ?'

'दादी जी । आठ सेर री-घणी सस्ती है, अर है ई मी ।'

'दस सेर री देवै तो एक आने री तोल दे ।'

'लौ दादी जी ! थाने तौ राजी राख सूं-गेलौ १० सेर री ।'

'आगे कई कोयनी भली, आईज रेमी ।'

'ठीक दादी जी'

'हाए, कैर कांकर दिया, सीतकी ?'

'बाई सा, छः सेर राली, देखौ !'

'वाली, कैर बडा घणा, मीं कोयनी' ।

'बडा टाळ'र दे दे सूं ।'

'तौ दे देखो दो आनां रा, भाव सात सेर रौ लगाये ।'

'लौ कनी, रात दिन रा गायक हौ ।'

'इण तरै सीतकी मीठी बोली सूं सगलां नै पटायर मोकळी साग बेच जांवती ।

सीतकी माळण ही । अर ही मिठबोलीं'र चतर ।

सीतकी बैगी उठती । गायां नै बांटो देंवती । ऊंठ नै नीरती । गायां रौ दूध दूंबती । फोटा थापती । विलाणो करती । पछै सीतकी री सासू पोतै नै सागै लेय'रौ बंध्यावाळां रै दूध देवण जांवती । आधौ दूध बंध्यां में देंवता, आधै रौ बिलाणो होंवतो ।

सीतकी री घर गिस्ती री चोखी व्यवस्था ही ।

सीतकी रौ धणी-नत्थू, कूवै पखाळ भरण जांवतौ, अर बंधीवाळां रै धरै नाखतौ । जचती तौ खुल्ली-ई-बेच देंवतौ । काळै ऊनाळे में पाणी री मांग घणी । पखालिया मूंडै मांग्या दाम लेवै । लोक-उपरा तळी पडै-यो कैवै पैला म्हारै नाखौ, तौ बौ कैवै म्हारै । इणगी बंधीचाळां री तककड़ । खांचांताणी में पखालियां री-वण आंवती । चोखा पईसा तोड़ता ।

सीतकी खोरसै सूं निवट, न्हाय-धोथ'र तुळ्छी रै क्यारै में पाणी सींचती । पछै रसोई चाड़ती । धू-दुपारै री १२-१२॥ नत्थू पाखी धरे दूकतौ । थोड़ी बिसाई खांवती । ऊंठ नै ठाण वांधतौ । पछै रोटी-दुकडै भेळी होंवती । सीतकी पछै पेट नै भाड़ौ देंवती । फेर वरसती व्याय में धू-दुपारै जंगळ में सांगरषां, कैर, खोखा, गंधिया तोड़ण निकळती । इतै थोड़ी फिरण री वेळा हुय जांवती ।

सीतकी कड़ी मैततण ही ।

रात पडियां सीतकी घरै पूगती जित्तै सासू रसोई चढ़ाय देवती । नल्यू गायं नै घांटो दे'र दू लेती । ऊंठ नै नीरतो पांवतो । नल्यू तो बंधीवाळा रै दूध पूगावण जांवती परी । सीतकी सगळां नै जीमावण-जूठावण में लागती । पछै आप जीम'र चौकीं यरतण करती । दूध कढ़ायती, जमांवती । पछै घमड़-घमड़ आटी पीसती ।

मे छांट हुयां नल्यू वाड़ी जांवतो परी । उठै खाखड़िया, मतीरा, फल्यां जांवतो । जणै लायण सीतकी नै मरण नैई फुरसत का मिळती हीनी ।

नीरणी, दूवारी खोरसे अर रसोई पाणी सू बैगी बैगी निवट'र सीतकी वाड़ी भातौ लेर जांवती । पाछी आंवती बड़ी-सारी-ओडी काकाड़ियां, लोइयां घरीरां सू छल लांवती । मण भर सू ऊंचो भार हुय जांवती । घर पूग'र कइयां रै घरै थेपड्यां री ओडी भर'र पूगावती । जित्तै चौकटे री टैम हुय जांवती । उठै थोक में माल बेच लेवती ।

सीतकी घरलोचू अर सैणी ही ।

टांकड़ै तिंवार ऊपर सीतकी आपरै बंधियोड़ै घरां में आखा सं भोळी भर लांवती ।

पछै घर-घर सू टांकड़ै तिंवार ऊपर रांधियोडी सामग्री पुरसाय लांवती ।

सीतकी राब-चौवार अर घोरोपी राखणवाळी ही ।

मालण्यां तौ छिडी-बिछड़ी हाळ ई केई आवै है । पण सीतकीवाळी माया सीतकी खनै ही । कठै वैरै जिसौ मेळ-मिळाप, कठै घोरोपी ।

## नंदी ओड

माथै ऊपर बोदी अर लीरा लटकती दमाली, काना में मुरक्यां, तुक्की मुक्की दाइकली, उघाड़ी डील, गोडां साईनी काठी धोतियौ, पगां में कारयां लागोडा लंबा-लंबा जूत, हाथ में डांग लियै, दिन चढ़ियां नदी, सैर री गळियां में कमठाणा जोयण निसरती ।

नंदी ओड ही ।

भाख फाटी नंदी रात नै उछेरियोडा गघेडां नै जोयण निसरती । गघेडा रोही में लाधे किठै ? पण नंदी ती थोड़ी ताळ में ई सगळां नै जोय'र टोर लांवती; नंदी गघेडां रै पगां रां सेनाण जोतो-जोती जिठै बे ह्योवता उठैई जाय दूकती ।

नंदी पागी ही ।

कमठाणा होधै जिठै धूड़ोई री क्या पार । नंदी घूड रै दिगलां में आंख्यां गडाय'र मन ई मन फळावट करती । पछै घर-घणी सं दोवाई रै मुकातैरी घात करती ।

नंदी हँसावियो ही ।

नंदी हरखांवती के अबकलै खेप कमाई री चोखी है । घर-घणी, हरखांवती के सयदी सस्तो ई दूकी है । दाव-भाव में दोये ई एक बीजे रा कान कतरु हा । पण नंदै री पिरथी माता में लैणियो ही—कमां जैरा जामा । दो पइसां री लाभ नंदै पासी ई रैवती ।

नंदी चतर सयदी पटावणियो ही ।

नंदै री घहू धैगी थकी वात्ररी रा सोगरा सेकती । जिकै ऊपर लूण-भिरचां री चटणी नाख'र सगळे जीमण लागता । पछै गघां ऊपर पावडा,

कुदाळा, भांफ अर टावर वगां, थोडा सोगरा'र चटणी मेल'र नंदी लुगायां-टावरां समेत, कमठाणै हूकती। छैया'री जागा डेरा लगांवती पछै सगळे काम में लागता। मोटियार ढिगली खोद'र पूर सळजांवता। टावर-लुगायां धूडोडै रा गधा भर'र सैर परकांटे सूं वार नाखण जांवता। ऊपर सूं लाय वरसै, पसवाडै सूं पवन खीरा उछाळै, सरीर ऊपर परसीणै रा परणाळा वैवै पण कई मजाल जिकी थोडी फेट खायलै। हां, तिस लागती जणै नीगळियोडै चाडै मांयलौ पाणी मोटौ लोटौ भर'र ऊभाई डकळ-डकळ पी लेंवता। कद सूरज मेळ वैठनौर, कद वापडा विसराम लेता।

जद सूरजजी विसाईजता तद ऐई काम छोडता। सस्वरपती संभाळता। पछै हाथ पग घोय'र घर री मारग लेता। कदेई कई चौवटै सूं सवदौ लावणौ हांवती तौ नंदी वठीनै चलौ जांवती।

रात पडी नंदी घरे पूगतौ। गधां नै रोही में उछेरती। लुगायां रोटी पोवती अर सगळे जीमण लागता।

जीम-जूठ'र मोटियार चिलमिया करता, लुगायां घम्मड-घम्मड आटी पीसती। इत्तैई में पाडोसी, आय जांवता। कदेई गप्पां लगांवता, तौ, कदेई भजन गांवता। रात मोकळी ढळयां पछै बिना बिछावणै धरतीई लटां दाई शुडक जांवता।

नंदी अबधूत हौ।

मेह मंड्या नंदी, खेत जांवती। लुगायां-टावर निदाण करता। नंदी हळ चलांवती बीज बांवती। इण तरै वरस भर खावण पूरती धान उपजाय'र नंदी पाछौ आंवती।

इत्ती मैनत-भजूरी सं कमाई करतां थकां पण, नंदी लाई करजायत ई रेंवती। कमावती जिकी खाय लेंवता। मरणै-परणै खंधीवाळां री गरज करणी पडती। चोटी लिखाय'र रुपिया लेंवती अर सईकै लारै २०) ३०) कटांवती। भली हांवती तौ १००) रा २०) नही जणै ७०) ७५) मिळता। इयै मांयसं ई १) फोयळी खोलाई री अर १) कयूतरां रै दाणै री देवणी पडती। अठीनै

नंदी भैत-मजूरी करण में कसर को राखतौ हौनी बठीनै खंधीवाळा ऊपरलौ-पानौ को आवण देंवता हानी ।

नंदी बापड़ौ करजायत रेंवतौ हौ ।

सैर री दुकाना में तरै-तरै री चीजां सजायोड़ी रैवै । नंदै'र बियै रै टावरां रै भावै तौ कई को हौनी । वे तौ आपरै काम सूं ईज पियोजन राखता । कदेई आंख उठाय'र सामौ जोवणौ किसौक होवै ।

नंदी साधू हौ ।

नंदी भणियोड़ौ 'कक्कोई' को हौनी । हेंसाव अटकल-पचवू सूं कर लेंवतौ हौ । टावरां रै ई काळी आखर भेंस बराबर हौ । सैर में घणी पोसवाळां-मदरसा अर कॉलेज तकतक खुलग्या हा पण इयारै भावै तौ कईन का ।

नंदी ठोठ हौ ।

जद कोई नंदै नै टावरां नै भणायण री कैवतौ तद बौ उथळी देंवतौ-म्हारै भाग में ई विद्या लिखी कोयनी । विद्या तौ थां लोगां खातर है । म्हानै तौ धूड़रा दिगला ई दोवणा है ।

कोई कैवतौ-टावर भणजासी तौ सोरा रैसी, चोखी कमासी चोखी खासी । नंदी कैवतौ-म्हे तौ सोगरा अर मोटै गाभां में ई मस्त हां । म्हानै क्यौं अजरा बोर भावै है ।

नंदी संतोखी हौ ।





## जेसियौ तंबोळी

जेसियौ जात रौ मथेरण ही । पण कैवता सागळे वैनै तंबोळी हा कारण वै पाना री दुकान खोल राखी ही ।

जेसियै री दुकान घणी जूनी अर नामंजदार ही । वैरै हाथा में जाबोडा छोरा, छोरां रा वाम, दादा अर पड़दादा वणग्या उत्तै वैरी दुकान धन्नाटै सू चलती ही ।

आज सूं तीस-चाळीस वरसां पैली पानां रौ चळण निराठ थोड़ौ ही । घणखरा परदेस रैवणिया लोग ई पान खाया करता हा । क्या कई रौ जी दोरी होंवतौ, खासी आंवती जिकौ मरेटी घताथ'र दवा दाखल पान खांवतौ । क्या कोई सौखीन होंवतौ जिकौ पान खांवतौ । लुगायां नै होठ अर जीव लाल करण सारू पान भिल्ल जांवता जणै वे खिलती-राजी होंवती अर धड़ी-धड़ी काच में होठ'र जीव देखती ।

होठ अर जीव लाल करण सारू छोरा-छंडा, लुगायां, गूंदी रा पत्ता खांवता ।

जेसियै री दुकान पोकरणां वामणां अर वांणियारी गुवाड़ में ही । वांणिया री वै वेळा क्यौं घात पृछौं हीं ! आघा दीया पाछा आंवता हा । लिखमी ऊंधी होय'र पड़ती ही । जीवना ई सरग रा सुख भोगता हा ।

धनवानां रै बियां-सगाई अर हरख-उछाय रै टांकड़ै तथा परदेस री जोयीजती मुसाफरी कर'र पाछा देस में आंवतै ई चौक में चमक आय जांवती । दिनंगै जीम-जूठ'र सै दूकता जेसियै री दुकान । चाय सूं चावता पान बोड़ा । दाना पकियोड़ा कपूरी पान खांवता ती मोटियार अर सौखीन मांगता मीठा अर बंगला । जेसियौ हाट में सगळी भांत रा पान राखतौ-कपूरी मीठा, बंगला, घोबला, अर देसी ।

जेसियै री हाट री सामली चवड़ी चौकी माथै चौपट मंडती । सगळां नै चौपट री सौख । सै जाय जमता । बीच-बीच में-लाव जेसिया पान, लागी रेंवती ।

घडों मजों बगलौ । रस बरसतौ—रंग जमतौ । पौधारै, दस पगड़ी अर चारकाणा रा बोल हवा में गुंजता ।

सिंघ्यानै कोटड्यां-बगेच्यां सूं पाछा आय'र जीम-जूठर सै जमता जेसियै री हाट रै आगै धरियोडै पाटै माथै । फेर लाव पान-लाव पान लागती । इसै मौकै जेसियै रै मोकळी कमाई-कजाई होंवती ।

पण बैगी ई जांवती परी भांग रै भाडै । जेसियै में बिरखा रै सबदै री लांठी लत ही । खोलै रंगबाजां में बैरी नांव हो । आभै सामो जोय'र बौ फट ई वताय देवतौ कै बिरखा घड़ी-दोय घड़ी में आय पड़सी ।

मरुभोम में बिरखा री कोड मौकळी हू ईज । अठीनै चौमासो लागतौ उठीनै जेसियै री हाट में 'अनवेशण दफतर' खुल जांवती । आयो-गयो, वैवतौ-चालतौ, सबदैवाळो-अणसबदैवाळी, बडों-छोटो, सगळे, जेसियै नै, मे री वाग्रत मन चाया सवाल पूछता—(१) मे री क्या डील हू ? (२) हुवसीती घणौ हू (३) परया हवा ई चलै हू (४) ऊगतै सूरज रै चारकर जळैरी हू हो (५) चिड्याई धूड में न्हावै हू (६) आभो ई रातौ हू (७) तीतर पंखी चादळी ई हू । जेसियो वैवतौ-अवै ती बिरखा आई ई देखौ ।

जेसियो रात री ११-११॥ वजी हाट चधांवतौ जितै तांई बिरखा री पूछताळ चालू ई रेंवती ।

जेसियै नै बिरखा री मोकळी ज्ञान होंवतै थकां वी हमेसा खोई में ई रेंवतौ । कैने ठा परमात्मा रै घर री लाई नै क्या फिटकार ही । वैनै पूछ'र लोक तौ कमांवता अर यो खोंवती । घाटै में वी बजार जांवणौ बंध कर देवतौ । कैना-अवै सयदो करणौ बंध कर देसूं । मसाणियो घैराग दोय-चार दिन ई टिकता, फेर वेई घोडा'र वेई मैदान ।

जेसियो हंसमुख अर मिल्गुसार हों । सगळां में खपतौ : टावरों में टावर, घरां में बडो । चाक्याळां में वी इसी खुलमिल ग्यां हों कै लोक

लखाईजतौ ईहो कोनी । वी गुणी अर वीश्रुत हो । घर-गिस्ती रै मामलै में लोक बैरी सलासूत लिया करता ।

रंग गऊं बरणी, आंख्यां बिचलै दरजै री, मंडौ लंबौ, नाक तीखौ, कान टिरियोड़ा जिकां में मुरक्यां पैरियोड़ी, भंवारा तीखी काजळ री रेख ज्यौं, कद लंबौ, सरीर पतलौ-दूबलौ, उणियारौ गंभीर, ओझौ-ओझौ चोलौ, गोडा साइनी घोती, माथै माथै अलेटिया-गळेटिया फूल गुलाबिया पागड़ी अर पगं में देसी पगरखी ।

जेसियौ हाट में काजू-काजू जिनस सगळी राखतौ । छोरा-छापरां नै राजी करण री मोकळी चीजां ही । पान, सुपारी, मरेठी, मसालौ, जरदौ-सुरती, हींगस्टक-री गोळयां, पीपळ पाक, गुळकंद रौ खाटौ, पचायोड़ी खारकां, जीरी, पीपळ, लूणिया-नींबू, पतासा, बिस्कुट, चीकणी सुपारी रा किरका, पोदीणै री टिकडयां, नींबू रसरी फांकयां, मैणवत्ती, बीडी-सिगरेट, तील्यां री पेट्यां, साबण, मूंगफळयां, लिफाना अर कारट । त्योवार-टांकडां ऊपर जोयीजती जिनसां ई राखतौ हौ । दियाळी में, छुरछुरिया अर गोळिया पिटाका, टिकडी वाळा पिटाका, नागवाळी टिकडयां, रंग-रंग री रोसनाई री पेट्यां अर फूलभड्यां ।

जेसियौ चतर बीपारी हौ ।

रात नै गळी-गुवाइ रै छोरं नै, किस्ती-भरां रा, सोनै, तोळै रा अर ब्याज रा लेखा घालतौ अर मालणी वचांवतौ ।

जेसियौ हँसावियो हौ ।

जेसियौ सत्संगी ई हौ । चौकलै रा दाना-बूढा अर भणिया-गुणिया सूं बैरै चोखी गुरवत रँवती । चोखी ज्ञान चरचा चलती । सासतरां री काण्यां अर दंत कयायां ई बैनै घणी याद ही । सुळभियोडौ अर दानौं मिनल हौ ।

जेसियौ पुण्यात्मा हौ ।

चौक रै सऊकारां रा टायर हाट में, कोई गैणी-गांठी भूल जांवता अथवा कोई सुल-टूटर पड़ जांवतौ, तौ जेसियौ वारै घरवाळां नै संभळाय'र देय देंवतौ ।

जेसियौ हाथ रौ साचौ हौ ।

चौक रा छोरा-छंडा, छोटा-बड़ा, बहू-बेटियां सगळै जेसियै रौ काण-कायदौ अर संको मानता । बराबरीवाळा बैरौ आदर करता । बूढा-बूढेरा सनेव राखता । जेसियौ कईने परायौ को लखाईजतौ हौनी ।

जेसियै री हाट खाली पाना री हाट ई को हीनी । बा मनोरंजन-कलब, सतसंग भवन, रात्रि पाठशाळा अनवेशण दफतर, दुख-सुख कैण-सुणन री सैयोगी संस्था अर भळै ना जाणै क्या-क्या ही ?

पाना री दुकानां तौ चौक में घणी ई खुलगी पण कठै बा बात ?

जेसियै नै परमात्मा री सरण में पूगा नै मोकळा बरस हुयग्या पण बैरी हाट खनै कर नीसरती वेळा बैरी पुण्य मूरती आंख्या आगै नाचण लाग जावै अर सुख-दुख रै भावां रै मेळ री तरंगा सूं हिरदै में एक मीठी पीड़ लखाइजण लाग जावै ।



## मनजी मचकांवाळी

मनजी लाई जिलम ती पंजीवाळी अर पूजीजतै घर में लियो हो पण हो भाग आडो भाडो । घर भिनखां सुं भरियो-तरियो हो : पगरख्यां ई मांवती को हीनी ।

न्यात में औसर-नुखता अर व्यांव-सगाई ठाठ-बाठ सुं करण सूं, इण परवार री चोखी साख-सोभा ही । औ सगळी मनजी रै दादै री परताप ही । बौ ईज ऊजळी जंवारी अर घनक नांव करणियो हो; वियै रै आख्यां मीचण पळै औ परवार परवारग्यो । कैवत ई है-एक रती बिना पाव रती ।

मनजी रै वाप सूधा च्यार भाई हा । च्यारे ई एक बीजै रा सिर खावणा, लखणां रा लाडा, पूरा गईवाळ ।

मनजी रै दादै आपरै जीवतै-जीवतै सगळां नै न्यारा किया जणै एक-एक री पांती में पचास-पचास तोळा सोनो, गैण-गांठा, कपडो-लत्तो अर मोकळा बासण-बरतण आया हा । चांदी री थाल्यां कटोरयां इण सुं पाखती । न्यारा-न्यारा पक्का घर सगळां री पांती में आया हा । नगद नांणो, एक-एक जणै री पांती में पांच-पांच हजार आयो हो ।

पण च्यारू भाई माया-मत्तां नै देख'र फीगरग्या । घडणो-बडणो वारै कुण घडतो हो । जूवै रमै, दारूडा पीवै अर पड्या रैवै रांड्या में । थोडा बरसां में माया मारगै लागगी अर खनै बंची नवनारायण री देह ।

मजा जिसी ई सजा । बेमारयां-सेमारयां सरीरां नै किणजा कर नाखिया अर दीखण लाग आगला घर । छेकड जमराज रै वारंट में जवतै हुय'र जाय पूगा-अदालत में ।

मनजी ओर च्यार भाई । मनजी री लाई री आख्या पांच बरसां री उंबर में ई सीवळ में गई परी । भायां में मोमी अर मनजी नै छोड'र धीजा

दोय साधारण घड़णी जाणै । पण चीलै वाप-काकां रै ई चलै-निखट्ट, जुबारी, दाखवाज ।

रोट्यां रा सांसा पडण लाग़ा । आजीवका रौ जावक डौळ नहीं । छेकड़ गांवडै सू पग छूटा ।

रुळता-भटकता पूगा बीकानेर । अठै मैनत-मजूरी री कमी नहीं । मोभी जेसौ, कदेई कंदोयां री मजूरी तौ कदेई ठाठै री मजूरी जावै । वीजां दोय भायां दुकान खोली । एकतौ वे कई घड'र न्याल करण जोगाई को हानी अर बीजी अणसैंधा होवण सू लोग धीज-पतीज करता को हानी ।

पण लाई मनजी में कोजी बीती । आंख्यां रौ आंधौ करै तौ क्या करै ? छेकड़ उपाय काढ़ियौ । रात नै लोगां रै मचका देवण जावै, तेल मालस करै । घंटै रा आना दोय लेवै । घणी रात ताई भूत दाई भटकै ।

चौक'र गळ्यां में ऊंचक-नीचक जागा, खाड-खोचरा, आखळ्यां कुत्ता-बिल्ला अर गाय ढांढा बैठा रैता पण मनजी तौ रागोलिया करतौ डांग रै सायरे निधड़क निकळ जातौ । आंधै रौ राम रुखवाळौ । भगवान री दया सू मनजी री मांयली आंख्यां खुलगी ही ।

लोगां नै दो आना में दो मजा मिळण लाग़ा-पगचंपी अर सत्संगः प्रायक बधता गया । गुजारौ चोखौ होथण लाग़्यौ ।

मनजी री बारली आंख्यां मींचीजियोड़ी पण मांयली खुल्ली ही ।

मनजी मचकांवाळौ ही ।

ऊनाळै में, गळी-गळी में लोग लुगायां धर री चौकी तथा पाटै ऊपर मनजी रा भजन सुणन सारू सूती-बैठी रैती । मनजी खनै मचका तौ एक-दो जणा दरांवता पण भजन सुणावण वास्ता सगळे वैनै कैवता-फलाणौ सूर रौ पद, फलाणी कबीर री साखी सुण कोई रुपादे वाळौ सवद-‘मलजी हुय जावौ संत सुधारौ थारी कायारे’ गावण रौ कैतौ । कोई सुखी राम रौ भजन ‘हलकारा खड़ा सिरकार का क्यौं नींद नसै री सोवै, कागद नै तू कटै लुकोवै’ कोई बूढापा बैरी कद हुबैला थारौ छूटवौ’ गावण रौ कैतौ मनजी सगळां रौ मन राखतौ ।

मनजी सतसंगी अर मैनती हौ ।

चारे भाई भेळा रैवै । मोभी सूं छोटै भाई नै परणावण री मनजी रे जची । रोट्यां रा फोड़ा पड़ै जिके तौ मिटे । पण भाग में सुख किठै ? कई रात री कड़ी खाटणी रा पइसा अर कई चोटी लिखाय'र, मनजी भाई रतनै री व्यांव कर दियौ ।

मनजी खरो फरजमंद हौ ।

रतन-नांव रौ चोर, खोटौ काचरौ टुकडौ निकळियौ : दुकान-फुकान कुण जावै । आखौ दिन जूवै रमै । कदै कुंई कमाय लेवै तौ दारुड़ा उडावै । मोभी अर मनजी ऊपर ऊंधै घटोलियै सूं मूंग दळै । किणी भाग फूटोडै घडणौ दियौ तौ सोनौ-चांदी वेच खायी । मनजी नै रुपिया भरणा पड़िया-‘भाभी नीपती जाय कौडौ खेल तौ ई जाय’ ।

मनजी जरणावाळौ हौ ।

रतन रा रोटी कपड़ै सूं जतन राखतै थकां बौ कोजी लतां री लपेट में आय'र एक दिन लंबौ हुयग्यौ । जीवतौ ई राखस हौ, दारु पी'र बहू नै कोजी तरै मारतौ । कणै ई बैरी तिणखौ, बीटी तौ कणै ई चोरियौ तोड़ ले जांवतौ । आप मरियौ अर वैनै ई मरण जोगी करग्यौ । छेकड़ वाई मनजी नै छोड'र, छैयासी सं छूटगी ।

मनजी उदार'र उपगारी हौ ।

फेर मनजी नै ऊंधी सूम्ही । अबकलै बिचलै बीरै नै परणावण'री जची । देखियौ कदास टुकड़ा सेकण सूं पिंडौ छूट जावै । पइसौ माथै कढ़ायौ कुंई घर सूं भेळियौ । मनजी रौ तौ देवाळौ पीटीज ग्यौ पण भाई सुगनौ भिडीज ग्यौ । बौ ही खोटौ रतन तौ ओं हौ असुगनौ-पक्कौ मनहूस ऊंधै घटोलियै सूं मूंग दळणियौ । केई दिन भेळौ रै'र न्यारौ घर मांडलियौ ।

घडणौ कई घड़'र न्याल करै ? आखौ दिन जूवै रमै अर चिलमिया चेतावै । घर में अन-दांतै वैर । मनजी रौ नांव लेय'र थानै-म्हानै ठग लावै अर मौज उडावै : लुगाई टावर आपरी करणी ।

मनजी सूं आ देखीजी कोयनी । बौ भौजाई-टावरां नै ले आयी । दादस बंधाय'र कयो-भौजाई रो मत । अठैई भेळा रैवौ ।

दोय-च्यार दिनां छेड़ै पापी सुगनौ कजियौ करणनै आय दूकौ । मारण लागौ लायण लुगाई नै । मनजी समभाषण लागौ जणै लुगाई नै छोड'र धैरै ऊपर हाथ उठावण लागौ; मनजी में हौ आंधौ जोर । उठाय'र पटकियौ अर बैठग्यौ छाती माथै । जणै हाथ जोड'र कैवण लागौ-अबै इयां कदे ई को करुनी । मनजी कयौ-बडौ भाई जाण-र किन्ती बार गम खाई है । अबकलै म्हारी मा समान भौजाई ऊपर हाथ उठायौ तो मनै जाणै ई है ।

सुगनौ कपूत तौ हौई पण कपूर वण'र मनजी नै फेर दुख देयग्यौ । किण्णी मनजी नै कयौ-थारै औ जंजाळ फेर घटतौ हौ । मनजी बोळियो-सै आपरै भागरौ खावै है, कुण कई नै खुंवावै है । ठाकुरजी टावरां रै भागरौ मोकळौ देसी ।

मनजी बिबेकी हौ ।

एक बार मनजी डांग रै सायरै काम जाय रयौ हौ । मारग में ऊभौ हौ'एक मारणौ गोधौ । कई मारी अर घाल सीगां में'र आधौ उछालियो । हाड़ खळकीजग्या अर पोताळां में घणी चोट लागी । बडौ भाई लाई नै एकै में घाल'र बडोड़ी असपताळ लेय ग्यौ ।

पांच मइना ताई वठैई पड़ियो रैणौ पड़ियो । दिन-रात भजन चूंचावती । भजन रै परताप सू असपताळ रा हिरदै हीण अर फुकनीवाज सेवकां रै मन में दया वापरगी । वे मनजी री पूरी साळ-संभाळ राखता ।

एक दिन एक जणै पूछियो—मनजी भायला, काल कई आखर खुलसी रे ? मनजी कयौ-मनै कई ठा भाई ? वो बोलियो-म्हारे तौ सातौ जचै, सुपनै में एक सरप देखियो हौ । मनजी कयौ-ठाकुरजी चावै तौ आय जावै । दूजै दिन सातौ ई खुलियो । अबै तौ असपताळवाळा वैनै सिद्ध कैवण लागग्या । मनजी बोळियो-हूं कांयरी सिद्ध हूं । हूं तौ निद्ध हूं, कपूत हूं, पापी हूं । भगवान नै भूलियोड़ी-भटकियोड़ी हूं । म्हारी किठै छूटकां होसी ?

कोई सतसंगी सुख पृष्टण गयौ जणै मनजी कयौ-ठाकुरजी करी सो चोखी ई करी । नहीं जद बैनै चाद करण री टैम ई किठै मिलती ? आ कैतौ-कैतौ धौ गळगळौ हुयग्यौ अर पांच-सात बार मंडै सं हरि-हरि जपण लागौ ।



आगै बोलियो-भाईजी ! एक दिन तो सुपनै में जमराज रा दूत लेखण नै आय ग्या हा। मनै क्या सुख है, पण मरणो चायी नहीं। इतै में ठाकुरजी रा दरसण हुया-मनोहर रूप, मोर मुगट धारण नै एक हाथ में बंसी। ठाकुरजी मुळकिया अर कयौ-मनजी घबरा मत। न्हारौ भजन करतौ रै। हूँ तनै अवार मरण को दूंनी।

मनजी भगत हो। बागदरां तो छुट्टी देय दी पण इलाज पूरौ हुयो नहीं। मनजी रै कुण पट्टी-पोळी बंधावण खातर असपताळ जांबतौ रैवै। एक दिन इसी जची जिकौ कई री बतायोडी देसी दया बजार सूं ले आयौ। बैसू तर-तार फायदौ हौवतौ गयौ अर कई दिना में पूरी तरै सूं ठीक हुयग्यौ।

मनजी बेमारी सूं उठियोडौ, खनै पइसौ नहीं। एक दिन चौक रै पाटै माथे बैठौ उदास हुयोडौ माळा फेर रयौ हो। सुस्ती अर धकावट सूं आंख्या इसी घुळी जिकौ बठैई गुड़क कर गुड़दापेच हुयग्यौ। सुपनै में ठाकुरजी कयौ-उठ, थारै सिरांतिये एक कागद री पुड़ी लाधसी। तनै जोयीजै जित्ता पइसा बैमें मिळ जासी।

आंख खुली तो साचै ई सिरांतिये पुड़ी पड़ी। बै में मोकळी रेजगी ही। मनजी भीज्योडी आंख्या सूं भगवान नै नमस्कार करी। रेजगी गिए'र, मनजी आखर बाय दियो। निनूगै रुपिया आय पड़िया।

मनजी इस्टी हो।

कई दिनां ताई मनजी रै जचियोडौ आखर ऊगतो ई रयी। पिरसिधी होवण लागी। लाळ लागगी, धूपाडियो सवदौ करै।

रात नै लाई आधी रात ताई हाइ भांगै, दिनूगै सवदौ इथैरा गोडा भांगै, बावौ कित गयौ न आयौ। मनजी सवदागर हो।

माथे मोकळा देणा फर लिया। माया रै चक्कर में चढग्यो।

एक जणै कयौ-मनजी, औ क्या कियो रे डफोळ ? जणै आंसू काड़'र माथे में तड़डी लियो। कयौ-माया लारै परभू नै विसरग्यो। अबै लत छूटणी थोखी हुयगी।

मनजी नै थापरी करणी ऊपर पछतार्यो हो।

## पौरायतणी-मदियै री बहु

आधै सईकैसू पैला री बात है। पिरजा में पराधीनता री भावना घणी ओछी ही। लैण-दैण, बौपार-बट्टै में असरची पड़ जांवतौ तौई लोग कचेड़ी री पराधीनता भोगणी को चांवता नी। पंच घाल लेंवता जिके दोनां नै सळटाय देंवता। कैवत है—‘राज रौ तेढ़ी नहीं आवै जम रौ भलां ई आय जावै।’

लोग चौवटै सूं घान-चून, तेल-लूण लांवता तौ डीले। कूयै सूं पाणी लांवता तौ डीले। लुगायां आटौ पीसती तौ डीले। गळी-गुवाड़ रौ परबंध करता तौ पांच जणा मिळ'र। राज रौ मंडौ को तकता नी। मरणै-परणै पांच भाई चलाय'र हाजर हुय जांवता अर काम-काज सळटाय देंवता। पंचां री बात परमाण मानीजती। पंच इसा जिके भुकते पाळणै रा सीरू नहीं-परायौ हित पैला आपरो पछै देखता। पाखंड-परपंच घणौ ओछौ। माईतां री परणाळ का ऊपर चलनौ पण आंख्यां खुल्ली राख'र। प्राणी पांचवान अर पुरसारथी। परायौ नरग निचोवणौ पाप जाणता। पुड़ी-पुड़ी रै मिनखां नै पळोटता-परखता। संयोग अर सायता री भावना भरियोड़ी। पोथा भणता-वाचता तौ जी लगाय'र पूरे परिसरम सू। मोथा-थोथा को रेंवतानी, भलांई आखर-आखर पृछ लेवौ। जणै बिडत कैवांवता-पूरी पढ़ाई रै ताण। परिख्यावां री पराधीता सूं परै रेंवता। पराई भासा परायौ पैरेस सू परै रेंवता। पराई भासा पढ़ता ई तौ मन अर माथौ परायौ को करतानी।

ठौड़-ठौड़ सगळा मानीजता-पूजीजता। धिरणा अर ऊंच-नीच री भावना घणी ओछी। परसेवै री कमाई नै आछी जाणता। पाप, पाखंड अर पचेडां सूं परै रेंवता। क्या-क्या गिणावां क्या-क्या बतावां ?

आपरी पांच भूतां री काया अर संचियोड़ी माया रौ परबंध हाफे ई करांवतां। पोलस रै परवस नहीं।

हां, तो इसी परबंध बांध राखियो हो कै रात नै पौरायतिया गळी-चोकां में पैरो देंवता । पोलस री पंचायती को हीनी । पौरायतियै रै रोटी-कपड़ै री परबंध गळी-गुवाड़वाळा करता ।

इसी सुणनै में आई है कै पछै पोलस पैरो देवण लागी । तीई पौरायतिया चलता रैया । पण पोलस धमकी दीवी कै पौरायतियां रै पौरै में, कदास, चोरी-चकोरी हुई तो पोलस जिम्मेदार नहीं बणैला । जणै श्री परबंध परायै हाथां गयो । पौरायतियां री पौरै बंध हुयो ।

पैला, रुपयै में, पनरै आना, लोगां रा घर कच्चा हा । होळी-दियाळी वे दड़ीजता-लेसीजता अर पोतीजता । पण श्रीई काम लुगायां खुदोखुद करती । हाफेई रोही मांय सूं गुड जांवती । फोटां री काळ को हीनी आज दाई घर-घर गायां ही । फोटा अर छाणियोडै मुड़ सूं दड़ा दरीजता-लेसीजता ।

पछै आंवती रंगाई-पोताई री बारी । इण खातर ई परायै मसालै अर परायै हाथां री परबसता को भोगता नी । पौरायतणी धौळी-लाल मिट्टी खारोटिया भर'र पूगाय देंवती अर घर री लुगायां हाफेई घरां री पोताई कर लेंवती ।

मदियै री बहू म्हांरी गळी में धौळी-लाल मिट्टी जोईजती जित्ती पूगाय देंवती । दिसा रा हाथ धोवण सारू पीळी मिट्टी ई लाय नाखती ।

मदियै री बहू पौरायतणी ही ।

वैरी ऊंवर साठा रै अड़ै-गड़ै ही किरड़कांटियो सरीर पण तांत करारी, काळौ वरण, छोटी-छोटी आंख्यां, चैरै माथै सळ पड़ियोड़ा, ओछौं लिलाड़, धौळा धक्क विखरियोड़ा केस, सरीर माथै बोदी कसांदार अंगरखी पैरियोडी, वा फाटी काळी ओढ़णी ओढियां अर पगां में फाटी फीड़ी पगरखी पैरियां राखती ।

माथै खारोटियो धर'र, वा बिरत रै घरां में मिट्टी पूगांवती । वैरी जागा वैरो ई काण-कायदी ही । छोटा, दादीजी, नानीजी कैवता । बडा आदर सूं बतलांता । साईना, साईना-दाई बोल-बतळांवता ।

मिट्टी पूगांवती जिकै दिन एक सापती रोटी मिळती । दाळ-साग हाजर होंवती ती बौई घालता । चारै महीना में उतारू गाभा देवता । टांकडै-तिघार माथै रीत मुजब धान देवता । कदेई वा कई सू' ना ती चिड़-भिड़ती अर ना ई घणी-थोड़ी कैयती ।

मदिये री बहू संतोखण ही ।

मरगौ-परगौ में नेग मुजब बैनै ई कई दे दिया करता । वा राजी होय'र लेंवती अर आसीसां देवती यधोतरी में ।

मदिये री बहू भोळी-डाई लुगाई ही ।

आडै दिन नितरी सिज्या नै वा गळी में आंवती अर घर रै आगे ऊभ'र हेलौ पाड़ती—'अडोई देवौ मां-बाप ।' बैरी मीठी बोली सुण'र टावरं हरखांवता, आधी रोटी बैने देवण दौड़ता । टावरं नै आया देख'र वा घणी राजी होंवती । टावर बैने—लौ दादीजी, लौ नानीजी कैयता जणै बैरी जी सोरो हुय जांवती ।

मदिये री बहू सुवावणी ही ।

मदिये री बहू नै मरियां जुग-जमारा हुयग्या । म्हे लोग टावर हा, जणै वा आंवती ही ।

पण हाल तांई बैने म्हे भूल गया होयौ इसी बात कोयनी ।

## बीजो खाती

बीजो ठळती आस्था री ही । ओळीं खामणी, दाडी अर केस करड-काशरा, पक्की रंग, लिलाइ माथे रामदेवजी री रिख्या लगायोडी, आख्यां छोटी-छोटी, कान टिरियोडा, जाडा भंशारा, पेरण नै एक बंडी, खांधे माथे रेजी री अंगोळी, लट्टे री ऊंची-ऊंची धोतियो, माथे दमाली पागडी-गट्टी जिके ऊपर काळी ऊन रे जाडू डोरें में पोयोडा रामदेवजी रा पागळिया बंधियोडा, पागां में खुडा-खांच देसी कारयां लागोडी पगरखी, बीजे खांधे एक जाडी मैली भोळी लटकयोडी जिके में जोयोजता राड-बसोली, रंदी, करोती, छीएया, हयोडी अर सार ।

बीजो खाती ही ।

म्हारी गळी में बीजो हकते में दोय वार ती आंवती ईज । येने संतसंग री सोरु ही । म्हारी गळी में पाधरीई बाबेजी रतनलालजी रे घरें जाय हकती । रतनलालजी री सोजी गई परी ही अर गंठिये रे कारण टुरीजती-फिरीजती को हौनी । वे घर में ई ठावा लाधता ।

बीजे नै आयी जाण'र रतनलालजी घणा हरखता, पाणी री मिनघर कता । पळे दोये जणा दो चोरयां माथे आमा-सामा बैठ जांवता । ज्ञान-बैराग री चरचा छिडती, हौळी-हौळी सबद गईजता । दोये जणा इसा मस्त अर लीन हुय जांवता जिको दीन-दुनियां री सुध ई को रेंवती नी ।

सिज्या पडी बैगीई रतनलालजी री यहू बेसण सेफ'र वेदवी पूड्यां तळ देंवती । दोये जणा जीम लेंवता । पळे बीजो माडोणी घर री मारग लेंवती ।

बीजो रोज नेम सं रामदेवजी रा दरसण करण जांवती । बांरी घणी मानता राखती । रोज पखाज करंवती, धूप लेंवती । घणी वार जम्मी दरांवती । बांटे इग्यास रे दिन नारेळ बघारती, सीरणी चदांवती-वांटती ।

दोय जणा भेळा होंवता जणै वींजी भगती भीजर केंवती-वळिहारे, वावै रै परचां री क्या-क्या वात कैवूं। फलाणै आंधळें ने वावै आंख्यां दीनी, फलाणै पांगळें ने पग, फलाणै कोड़ियो रौ कणक भडाथौ। वावौ हाजरी हजूर है।

वींजी भगत ही।

वींजी, मांचा सालती, घट्टी री पाथो-मकड़ी करता अर वींजी खोटवों काढ़ती। कदै ई जच जांवती तौ घट्टी टांच ई देंवती। देंनगी री रूप उण दिन एक रुपयो ही वींजी ई इण सूं ओछी को लेंवती हौनी।

रतनलालजी रै घर में ई काम पड़ती, तौ ई, रुपयै सूं ओछी को लेंवती नी। मुलायजै सं जीम भलाई जांवती।

म्हारी गळी-गुवाइवाळां सूं वींजी घणो मीठी बोलती, ज्ञान बघारती। आधे-चोथाई दिन में होवण याळें काम में वौ तौ पूरो दिन लगाय देंवती। जणै केंवता-इत्तै सै काम में दिन पूरो करदियो जणै उथळो देंवती-कामने तौ टैम लागसी। म्हारै सूं नहीं पतीजौ तौ आगै सूं वींजै नै बुलाय लिया करो। अघेलोई ओछी लेवण नै राजी को होंवती नी। ज्ञान-गोचर में, वौ जित्तौ सैणो ही, आपरै मुतलब में, उण सं ई, सवायो सैणो ही।

म्हारी गळी में, वरसां सं आंवती, सगळां सूं सेंध-पेंचाण हुयगी ही। मेळजोळ बघग्यो ही। पण क्या मजाल जिको कई रौ मुलायजौ राख देवै।

गळी में एक जणै रै वेटै री व्यांव ही। जान में वौ वींजै नै मेळ-मुलायजै सं जीमावण लेयग्यो। सगां रै घर सूं दोय नारेळ दराया। व्यांव रै घर में थोडो-घणो खोटवों रैवै ई। तौ वै वींजै नै काम भोळाय दियो। वींजै तौ मेळ-मुलायजै नै ऊंचो मेल'र भट ई एक रुपियो दानगी रौ मांग लियो।

वींजी मुतलबियो ही।

वींजी अर रतनलालजी आज दोये परलोक सिधार गया। पण कदै ई गळी में कई खाती नै आयौ जोय'र, वींजै री याद आच ई जावै। दोय छाया चित्तर, आमामा-सामा बैठा ज्ञान चरचा करता, आंख्यां आगै आय जावै: एक स्वार्थी अर वींजी परमार्थी रौ।

## सिणगारी सेंसण

सैंस्यां री जाती पैला तौ उठाऊ चूला'र अपराधी गिणी जांवती ही ।  
सायद पोलसवाळा इयांरी निगराणी राखिया करता हा ।

श्रै उदबुदा जीव है । क्या बोली सू क्या पैरेस सू । इयां री रैण-सैण  
अर रीत-रवाज न्यारै ई ढंग रा है । श्रै निरदर्ई अर अंत लोभी हुवै है ।  
अब्बै-खब्बै में, एकल-दोकल नै श्रै लूंट-खोस लेवै अर मार ई नाखै । दुरगुण  
तौ इयां री नस-नस में भरियोड़ा है, गुण कोई होवै तौ भगवान जाणै ।  
इयां री लुगायां इयां सू घाट कोयनी । इयां रै माथै बांधण जोग्यां ई है ।  
तेलण सू नही मोचण घाट बैरी मोगरी बैरी लाट ।

श्रै लोग आदू सं किठै सं उठिया, किठै-किठै रैया, किसी इयां री  
बोली है, किसी जात है, किण-किण भेळ सू बा बणी है, इण री पतौ तौ  
जात्यां रै निकास-विकास री खोज करणियां नै ई लाग सकै । आपां नै इथै  
खटपटै सू क्या पिरयोजन ?

सैंस्यां री जात मांगणी है । घर में चूली बाळण री तौ इयां नै सौगन है ।  
दुनिया खावण-पीवण सारु कमावै है तौ श्रै भेळा करण सारु । खावण-  
पीवण रै खरचै री चिंता-फिकर ई तौ भिनखा नै गिचाय-थकाय देवै अर  
टिकाय देवै गोड़ा । वे चिंता सं चीथीजियोड़ा रैवै है । कैवत में ई कयौ है'कः-

भूल गयी रंग-राग भूलगयी छकड़ी ।

तीन बात याद रही तेल-चूण लकड़ी ॥

पण सैंस्यानै तीना री चिंता रैवै कोयनी । जणै ई ढूँठ-रा-ढूँठ घणिया  
डोले है । किठै ई जीमण-जूठण हुवै तौ कागलौ अर सैंसी तौ उठै पूगी ई ।  
कागलौ उडायां तौ उड जायै । श्रै जमै जिकौ इसा जमै कै बिना कई लीया  
इयां नै जमराज ई उठाय ले जायै तौ भलाई माड़ाणी ठोड़ धोड़ी ।

सरम-ह्या, मान-अपमान, तौ जुगां सूं इयां री आख्यां अर मनां सं फरलंग हुय चुका । तौ इयां खनै जमा-पूंजी ई मोकळी हुवै । कैवत में कयौ है—'धन तौ सँस्यां खनै घणौ हुवै ।'

छोरा-छंडा, टावर-टीकर, मिनख-लुगायां, तत्रला अर मैला-गिंदा कटोरा लेय'र लोगां रै जीमण री चेळा सूं थोड़ा पैलाई घरां सूं उदर जावै । आखौ दिन गळी-गुवाडां में गोता खांवता फिरै । भलाई इयानै फटकार दौ, ललकार दौ, धमकाय दौ, अठै ताई लकडी उठाय लौ पण अँ वदा तौ इसा नकटा-सुरड़ा हुवै कै खिसकै ई कोयनी । कई दियां सूं ईज इयां सूं पिंडौ छूटै । इसा वदमास जिकौ मंजोरी न्यारी करण लाग जावै अर काढ़ण लाग जावै गाळ । टावरां नै ठगण सारू लकड़ी रा डेडरिया अर पूर री दड्यां राखै ।

तौ सँसण सिणगारी म्हारी गळी में नित री फेरी देय जांवती । लंथी तडंग, काळो-कोजौ उणियारौ, चूंखा बिखरियोड़ा, फाटा गाभा, फाटौ ओढ़णौ, पीळा हुळक दांत, फोटै दाई नाक, बड़ी-घड़ी ह्या-दया वायरी आख्यां उभराणा पग, गिरियां सूं ऊंची कांसी री कड्यां पैरण नै एक हाथ में घोचौ अर बीजे में मैलौ-गिंदी कटोरो । फलाणै री मां, फलाणै री दादी, फलाणै री नानी—म्हारी ई सुणाई कर ए । कई घाल ए वडभागण, कैय'र घर आगै अड़ी कर'र ऊभ जांवती । टावर रौळी सुण'र बार निकळता जणै वानै पूर री दड्यां देखाय'र लकडी रा बाजणा डेडरिया वजाय'र कैवती-रोटी ला भाइया रमतिया देसूं । सुणाई होंवती कमती देखती जणै फेर वडंग मारती—ए घाल ए भाइयै री मां, थारै भाइयै री हजारी ऊंवर करै—थारौ सुवाग वधै । इण सूं ई पार नहीं पड़ती जणै गावण-नाचण लाग जांवती । अपजोडिया सृगला गीत गांवती :—

हाए, कै लिछी थारी गोळ पिंडियां  
गोळ पिंडियां, गोळ पिंडियां हाए  
जोवन भोला खाय चिमूडी  
मार फटकारौ थारै जोवन रौ  
मार निजारौ थारै नैणां रौ ।



नाचती-गांवती जणै छोरा-छंडा भेळा हुय जांवता । ताळयां वजावण लागता । कोई-कोई वडाई वार निकळ आंवता । नाच-गाय'र सागी ई समोग देंवती-ए लाग भाइयै री मां, थारो चूडो अखी रैवै, सुवाग बधै । ए घाल ए कोई वासी-कूसी टुकड़ी । ए दे ए वडभागण हाथ रौ उतर ।

इयां गळी में राफड़ घालती जणै घर-घर सं रोटी-टुकड़ी मिळ जांवतौ । जणै मांगती दाळ-साग । पछै पिंड छोडती ।

ओसर-जीमणवार होंवती जणै कनाथ रै वार ऊमी रेंवती । टावरां नै रमतिया देखांवती, डेडरिया वजांवती । कैयती-एँठ घाल मनै, रमतिया घणा देसूं । जितै जीमण उठतौ नहीं उचै वा खेळौ छोड़ती नहीं ।

व्यांव-सावै, मरणै-परणै, वा घर रौ खेळौ छोडती ई का हीनी । घरवाळा वैंसं उथप जांवता पण वा का उथपती हीनी ।

हमें तौ सैंसी-सैसण आवणा घणा ओछा पड़ ग्या । कोई कदेई भलां ई आय जावौ । हां, जीमण-जूठण ऊपर तौ हाल ई कागला चूकै तौ ओ चूकै ।

हणै कई बरसा सं एक दिन सिणगारी म्हांरी गळी में आई । घणी चूडी हुयगी ही । बतायौ हूं परदेस गयी परी ही । बडी-बूडी लुगायां बैनै देख'र हरखी, वैं सं बातां करण लागी । दुख-सुख री पूछण लागी । चलाय'र घर-घर सूं बैनै रोटी दी, दाळ-साग घालियो । उठै ई जीमाय'र बैनै ठंडो पाणी पायौ । देख'र घणौ इचरज हुयो अर मन में विचार उठियो कै ममता ई किसीक चीज है ।

पछै तौ फेर सिणगारी नै देखी ई कोयनी । भोकळा बरस हुयग्या । हमें तौ मरईगी दीखै है ।

चोखी-कोजी, सुवावणी-अणखावणी घटनावां मनां ऊपर किसौक हळकौ-फीकौ असर छोड जावै है जिकौ सिमरती में लंबाण ताई धूं धळी-धूं धळी बणियो रैवै है ।

## बाली सामी

बाली सामी नित नेम सू, सिज्या नै, म्हारी गळी में आया करती । लंबी खामणौ, अध बिचली आंख्या, धौळा केस, बडी मूंछा, लंबी दाड़ी, चबडौ चंनण चरचियोडौ लिलाड, जिकै ऊपर च्यार रेखावां कान टिरियोडा, माथै धौली पागड़ी, पैरण नै घोदौ ढीलौ चोळौ जिकै रै ऊपर एक धौळौ चदरौ ओढियोडौ दोनां बंगलां में च्यार भोळया लटकायोडौ, गोडां साइनी धोतियो, पगां में देसी जूती अर हाथ में एक लंबी लकड़ी जिकै रै माथै लोरौ एक जाळीदार पौलौ, जिकै सू लटकती एक सांकळ ।

घर में बंडतौ ई, बाली, जै गोपाळजी री कैवतौ । जणै घर मांय सं कणै ई गंवारी तौ कणै ई बाजरी री रोटी, कणै ई आटौ घाल देंवता ।

टावर, बालै नै भूम जांबता । कैवता—बाबाजी छुट्टी दौ—बाबाजी छुट्टी दौ । पैला मनै, पैला मनै, कैय'र आपस में लड़ता-मगड़ता । जणै, बाली, छोरां रै हाथां सू पोलै सू लटकती सांकळ छुवाय देंवतौ । सगळां नै राजी कर'र चल धरतौ ।

बाळौ बाजरी री'र गवां रौ आटौ, गवां री अर बाजरी री रोट्यां, न्यारी-न्यारी भोळ्यां में घालतौ ।

बाली गोपळजी रै मिंदर रौ भोळी फिरणियो हौ ।

बाली अर बैरै घरवाळा गोपाळजी रै मिंदर में सेवा-चाकरी करता । बासी फूस बारी काढ़ता, पाणी भरता, मटक्यां छाणता, गायां नै चरांवता-पांवता, चाटौ देय'र दूध दू'वता, तुळसीजी नै सींचता, मैतजी री रसोई करता अर चौबटै सं सबदौ-सूत लाय देंवता । इणरै चदळै में वानै भोळी री मोकळौ आटौ, मोकळी रोट्यां नितरी मिळ जांबती । तियार-टांकड़ै, जीमण-

जूठण ऊपर गोपाळजी रौ कांसौ पुरसीजतौ जिकै मांय सं मैतजी थोड़ी जिनस राख'र बाकी री, बालै नै देय देंवता ।

आ बात को हीनी कै बालौ अर बैरै घरवाळा मिंदर री रोटयां ऊपर ई जी जमाये बैठा रेंवता । पसवाड़ै बीजी ई मजूरी करता ।

बालौ माचा बणतौ, निवार रा ढोलिया बणतौ, छपरा छांवतौ । चोक्षी मजूरी कर लेंवतौ, बेटा ई सेटा रै अर राज में नोकरी करता ।

बालौ अर बैरी परवार पक्की मैनती ही ।

बालौ मिठ बोलौ, भलौ अर मिळणसार ही । घर में ई सोरौ ही । सगळे बैसं राजी रेंवता बौ, सगळां रौ मुलायजौ राखतौ अर भौळायौ काम कर देंवतौ ।

बालै नै परलोक पूगियां नै मोकळा बरस हुयग्या । हाल ई जद गोपाळजी री भोळीवाळौ सिंज्या नै आयै अर टाबर बैनै लट्टंब जावै जणै बालै री पुराणी याद आये बिना का रेंवैनी ।

## तेजो सोनार

तेजै री ध्यान आंवतै ई एकवार तो कालजै में हूक उठण लाग जावै ।  
जी कळमळावण लाग जावै ।

एक दिन लाई भुल्लां-पट्टां में हौ, खनै दो पईसा हा अर ही  
साख-सोभा । पण एक दिन इसौ आयौ जिकौ खावण नै टुकड़ा ई मिळणा  
दोरा हुयग्या । तीजोड़ी घूढी बहू लायण बाणियां री खोरसौ करती, चौकौ  
बरतण करती अर दो पइसा लांवती । अठीनै तेजै रै एक तो दिनां रै फेर सूं  
घड़नौ आंवतौ ई को हीनी । रुळियौ-खुळियौ काम आंवतौ जिकौई बैसं पार  
को पड़तौ हीनी । कारण सोजी मंद पड़गी ही अर बैठकवाजी इत्ती हो का  
सकती हीनी ।

करमां री चक्कर इसौ जोर सूं चलियो जिकौ लाई तेजैने चकरबंडी  
चढ़ाय दियो । जिकी गळी में बौ जवान सूं घूढौ हुयो, चा गळी ई छूटगी ।  
बीजी अण सैंधी ग्वाड़ में जाय'र बसणौ पड़ियौ । जूनी गळी री तौ ईट-ईट  
भाठौ-भाठौ सैंधौ हौ । नवी जागा, सगळी बातां नवी । नवा उणियारा नवौ  
वौवार । घर में खावण री कसालौ ऊपर सूं सोजी मंद । भूख तौ दोयां बखता  
लागै । पण भूवाजी सासती घर में ई बसै । भूख'र भूवाजी में माईत-टाबर  
वाळौ नातौ ।

लाई तेजो सारी तरै सूं खफाखूंद हुयग्यौ । जणै एक विध बैठाई ।  
लुक'र रेलघाट जांवतौ परौ । उठै मजूरी करती । सिंज्या ताई आटै-लूणवाळा  
पइसा कर लांवतौ । पण सरीर अकड़ जांवतौ जाणै ढांगां सूं कूटियोड़ी हुयै  
लाई कद मजूरी करी ही दिन बदलै'न मजूरी करै ।

अभाग कैवै—हूं तनै समूळौ ई गिट जाईस ;

कई मजूरी कर'र आप, तौ कई बहू खोरसौ कर'र लांवती जिकै सूं  
चेपी-चापी चलतौ ही ।

पण एक बात इसी हुई जिको मरिये ऊपर फेर लात लागी । एक ब्रिणयाणी तेजे री वहु नै सोने री जिनस चोरण री चोचौ लगाय दियौ । पोलस आई । डोकरी नै जबतै कर'र कोटवाळी लेयगी । लायण रोय-रोय'र कैवै-में चोरी करी कोयनी वापजी, पण कृण बैरी सुणै ।

तेजे नै ठा पड़ी । लाई-रोंवतौ-विलखतौ जूनी गळी में आयौ । गळीवाळा दाना-बूढ़ा कोटवाळी गया । तेजे री वहु री खातरी दीवी अर जमानत देय'र छोडाय लाया । दोनू जणै लाख-लाख आसीसां दीवी ।

पोलसवाळां गरीबणी नै इसी कूटी-इसी कूटी कै अधमरी करदी । केई दिनां ताई मांचै सू उठीजियौ ई कोयनी इयै बात री तेजे रै हिरदै ऊपर घणौ गैरी असर पड़ियौ । पण जोर क्या बटै ? बैनै मजूरी ऊपर तौ गयां ई सरै, नहीं जणै टुकड़ा-किठै सं मिलै । दोष तौ आप, एक लाई अभागौ छोरौ ।

छेकड़ तेजे रै जंवाई—बेटी री सीक रै धणी, नै ठा पड़ी । बौ आयौ अर छोरै'र डोकरी नै गांव लेयग्यौ । तेजौ, तौ, जितै खूट ग्यौ ही ।

इण घटना नै देख'र मन में विचार उठियौ कै कदास, सोनारां री कोई संघ ब्रिणियोड़ी होंवतौ अर हरेक सोनार, कमाई मांय सं रुपियै लारै, पाई-पईसौ संघ रै फंड में जमा करांवतौ होंवतौ, तौ, तेजौ, कुत्तै री मौत को मरतौ नी । सोनारां री पंचायती तौ है पण वातौ कई नै न्यात बार कर देवै, कई खनै डंड भराय लेवै अर कई री होकौ पाणी बंध कर देवै । इसी, जड़ री बात माथै, पंचायती री ध्यान ई क्यों जांवतौ ही । खैर छोडौ ।

तेजौ सोनार ही । चोखा दिन देखिया हा । मोकळौ घड़णौ आंवतौ ही । मोकळी पैदा ही । मिनखां में मिनख ही अर ही साख-सोभा, खाली ई को होनी ।

केवत में कैवै है—'सोनार बेटी रा ई हांचळ काट लेवै' । पण तेजे ऊपर आ वान लागू का पड़तौ हीनी ।

जूनी गळी में रेंवतौ जणै गळीवाळां सू आछी-भायां जिसौ बौधार राखतौ । छोटी-मोटी गैण री दूटत-भागत सुधारतौ तौ कई सं कौडी ई को

लेंवतौ नी । गळी री बाई-वेटी नै आपरी बाई-वेटी मानतौ । कई लुगाई रै सामनै भर निजर जोंवतौ को हौनी । आपरै काम सूं काम । सगळां सूं सेवासिलाम । सगळां री काण-कदर सगळां री मुलायजौ ।

तेजौ पुण्यात्मा हौ ।

दिनूगै बैगौ उठ'र तेजौ जंगळ में दिसा-फरागत जांवतौ । पछै आय'र दांतण-कुरला अर सिनान करतौ । फेर भगवान रा दोय नांव लेंवतौ । रामजी रै चित्तर रै धूप खेंवतौ । पछै वरसाळी में आय'र राद्ध-रूद्ध ठीकसर जचांवतौ-हथोड़ी, हथोड़ी, कतियौ बडौ-छोटौ, जंभूरो, सिंढासी, पलास, चूंघ्यां, रेती, छीणी, जितरी, कांटी-चाट, चांकी, मूस, पीतळ रौ दियौ, नाळ, रेती भिजोवण री कूंडी, ऐरण, बालकूंची, अंगेठी-अंगेठी, नवसादर, सुवागौ, तिजाव, पीसियोड़ी चूनी, सिंचा-छोटा-बड़ा ।

इग्यारस रै दिन कथा सुणतौ । रात नै माळा लेंव'र घणी देर ताई राम नाम जपतौ । कूड़-कपट आटै में लूण माफक-दासभाव धरत तौ । सरधा सारू दान-पुन ई करतौ ।

तेजौ धरमात्मा अर भगत हौ ।

तेजै री, पैलड़ी बहू इसी ही जाणै आभैरी बीज, सावण री तीज, चांदै मांय सूं चीरियोड़ी । आंख्यां में इत्ती सरम ही कै कई सूं चौ निजर ई को होंवती नी । गैणा-गांठा पैरियोड़ी साख्यात लिखमी दीखती । गुण ई लिखमी जिसा हा अर हौ नांव ई लिखमी ।

गळी री लुगायां सूं पूरौ-पूरौ हेत-मेळ राखती ।

दोयां री चोखी जोड़ी जची ही । जिठै लिखमी उठै दाळद रौ क्या काम ? घर हंस तौ हौ । तेजौ, लिखमी नै, गळै री हार कर'र राखतौ । क्या मजाल जिकौ कदेई दिर-छिर ई कैय देवै । अछन-अछन करतौ ।

तेजौ, नारी रौ खरौ मोल्-पारखू हौ ।

इण लिखमी रै एक वेटी हुई-मोवनी । बाई मां ऊपर गई । कैवत में ई कैवै है-मां जिसी डीकरी घडै जिसी ठीकरी ।

मोवनी रौ ब्यांव तेजै गाजै-बाजै सूं कियौ । गांव-गांव सूं मोकळा सोनार आया । केई जान में, तौ केई भायां में । गळी ऊंठां सूं भरीजगी । ऊंठा रै नीरै-चारै रौ बंदोबस्त कियौ । आवणियां रै चिलमिया अर होकै-पाणी रौ ओपतौ जुगाड़ कियौ । गांवां सूं मिणावंद घी मंगावौ । आछा-आछा पदारथ-पकवान बणाया । पइसै नै काकरो कर दियौ ।

तेजौ श्रीलौदीलौ ही ।

गळी-गुवाड़वाळा नै हाथ जोड़र भेळा किया । चारौ घणौ मान-सनमान कियौ । बाई तेजै रै सगां री आपरै सगां दाई खातरी की । तेजै आपरी ठोड वानै ई थरप दिया ।

तेजै री बहू-लिखमी गळी री लुगायां नै चाव अर आदर सूं बुलाय लाई । बैरी तरफ सं बां सग्य री खातर की ।

तेजो घणौ मेळू अर मीठौ ही ।

पछै लिखमी सरग सिधारगी-बीजी घर में घाली । चाई थोड़ी जीवी । मर'र दुख-दगौ देयगी ।

हमें तेजो तीजी लुगाई लायो । ऊपरडालै सूं वा घर में बड़ी । परणीजियोड़ी ईज सामै मवड़ै बड़ै । इण रै चूदापै में जांवतौ एक छोरो हुयो । तेजै रा कंईक आंसू पछीजिया । पण वेमाता हंसी कैयो—ऐ आंस क्य पछै है हाल तनै आसूवा री नदिया बैवावणी है ।

तीजी लुगाई 'गूजर' कैयावै, पण परणीजियोड़ी हुवै जिका ।

तेजै रौ दिन बदळियौ । लिखमी रै मरणै सूं लिखमी तौ पगे लागणा कर ई गई ही । पैदा ई पोची पड़गी अर पोची ई पड़गी निजर ।

वेमाता री गत वेमाता ई जाएँ । लाई इसै खरै भलै-भोळै, सीधै-सादै अर धरमातमा मिनख नै छेकड़, रोवाय रिबकाय'र, तरसाय-तड़फाय'र, परलोक भेजण रा करूड़ लेख लिखती वेळा बैरौ काळजौ कांकर, भाठै दाई काठी हुय ग्यो ? चाई जाएँ ।

आज तेजै नै पग पसारियां दोय जुगां सूं ऊंचा हुयग्या । म्हारी गळी रै जिकै घर में पैली पोत वी रैवतौ हौ बौई पसर ग्यौ ।

तेजौ परलोक पूग ग्यौ तौ क्या हुवै ? वैरै सरीर रौ छाया चित्तर इयै लोक रै मानवियां रै मांयलै मना में तौ हाल ताई इसौ रौ इसौ मंडियां पड़ियौ है । विचलौ खामणौ, गोरी गट्ट सरीर तीखौ नाक, बडौ माथौ, टाट पड़ियोड़ी, छीदा दांत, बडी-बडी आंख्यां जिकै ऊपर धौळी डांडयां रौ चसमौ, जाडा भंवारा, लंबी काळी ओपती दाड़ी, माथै फूल गुलाबिया पागड़ी, पैरण नै कसां दार अंगरखी, ऊंची-ऊंची धोतियौ पगां में देसी पगरखी अर हाथ में छड़ी ।

जद गळी रा दोय दाना भेळा हुवै, जूनी बातां री चरचा चलै जणै तेजै री बात अवस कर निकळै । जिकै नै सुण'र नवी पीड़ी रै श्रौतांवां रै मांय तेजै रै गुणां री खुसबो पसरै अर बे आपरी कल्पना रै सायरै आपरै मांयलै पासी मानरवै रै ओपतै-सोवणै चित्तर रा धूं धळ्ळा लीख-लीखाटियां खांचण लागै ।



## ऊमो दरजी

माथै ऊपर विदरंगी पागड़ी जिकै में जागा-जागा पोयोड़ी सुयां खसो-  
ळियोड़ी, आंख्यां ऊपर चांदी री ढांड्या री चसमो, लिलाइ माथै रिख्या  
लगायोड़ी, तोला भंवारा, तीखी नाक, गोरी रंग, दूवळो-पतळो सरीर, दाड़ी रा  
केस त्रिखरियोड़ा, छोटी मूंफाड, चिपियोड़ा गाल, बगलबंधी पैरियोड़ी, खांधै  
रेजी री गमछो, हाथ में गज अर कतरणी लियो, गोडां साईनी धोती अर  
देसी पगरखी पैरयां ऊमो म्हांरी गळी में आया करतो। वो घणोसोक  
रतनलालजी वाबैजी रै घरै ठेरिया करतो। अर इयां गळी में सगळां री  
भौळायो काम धंधो करतो।

ऊमो दरजी ही।

ऊमै री ऊंवर पचासां सूं ऊपर ही पण वत्तीसी खंडत को हुथी हीनी।  
वो छोटै टावरां रा खलका, धूड़ी लुगायां री कसांदार अंगरख्यां, बूढ़े  
भिनखां री बगलबंध्या अरचोळा सीया करतो। सीयाळै में रुईदार अंगरखा-  
अंगरख्यां, रुईदार फतोयां, काना री टोप्यां अर सूंधणा सीया करतो। वो 'जूने  
ढंग रा कपड़ा सीवतो, नवी फैसन रा कपड़ा वैनै सीवणा आवता को हानी।

रतनलालजी सूं बैरै खूब छणती। खूब घुळ-मिळ'र सतसंग होवती,  
बीच-बीच में ऊमो बनानाथजी माराज री वाण्यां रा बोल सुणावतो। वाण्यां  
में जोग अर वैराग री विसै। इण में ई दोनां री रुचि ही। पण रतनलालजी  
भगत ई हा, भागोत ई सुणिया करता।

ऊमो ई रामदेवजी री भगत हो। वास्यां निरगुण री आधी लागती  
पण आस्था सगुण में ई ही।

जठै जम्मो दरीज तो, वाण्यां गाईजती, चठै ऊमो पूगतो ईज।

ऊमो भगत अर सतसंगी ही।

रतनलालजी रै घरै कपड़ा सीशायण रौ काम पड़तौ तौ ऊमौ रूण सूं थोड़ी दैनगी लेंवतौ-वाई घणी कैवासुणी करणै सूं अर रतनलाल रै जोर देयर आ बात कैणै ऊपर-‘गाय घास सूं भायला घालसी तौ खासी कैने ।’

ऊमौ मेळू अर मुलायजैवाळी हौ ।

ऊमै नै गळी-गुवाड़ रा आदमी घणा चांवता हा । खासतौर सूं लुगायां तौ बैसू घणी राजी रैवती । वो टावरां नै राजी राख देंवतौ । सीवाई लेवण मै बाकी को फाड़तौ हीनी । दैनगी दो पइसा बीजां सूं थोड़ी लेंवतौ । मोडा-बैगा पइसा देंवता तौई मौड़-मपाटौ कदेई को करतौ हीनी ।

गळी मै बड़तौ जणै लुगायां वार कर घूम जांवती । काई फाटै गाभै रै टांकी दरांवती, काई मिनखां री फाटी धोत्यां मै डांडिया घलांवती । बी सगळां री बेगार मुलायजै सूं काड़तौ अर पइसौ ई लेंवती को हीनी ।

ऊमौ खरौ सेवाभावी अर परमारथी हौ ।

रुपियै-वारांना री मजूरी वण जावण सूं ऊमौ काम छोड देंवतौ अर ज्ञान री पोथ्यां कुचरण लाग जांवतौ । कणै ई च्यार सतसंग्या नै भेळा कर’र सतसंग छेड़ देंवतौ ।

कोई मातमा साधू-संग, पधारता तौ ऊमौ धू चूकै तौ बारै दरसण नै चूकतौ । आप सं वणती पत्तर-पुसब सूं सेवा करतौ । डीलै वारी सेवां करतौ, मचका मुट्टी देंवतौ, गाभा धोय देंवतौ, फाटी चादरां रै टांका लगाय देंवतौ । बठै सतसंग उपदेश अर ज्ञान चरचा होंवती, तौ बी सगळां सतसंगी भाया नै बारै घरां सूं बुलाय लांवतौ ।

ऊमौ मातमावां मै घणी श्रद्धा राखतौ हौ ।

ऊमै मै ज्ञान हौ, त्याग हौ, सेवा ही अर-ही परोपकार री भावना । बी बस पडियां हालती कीड़ी नै ई दखल को देंवतौ नी-वैराग री पासी बैरी घणी रुचि ही ।

ऊमै रौ सरिर कायम को रयोनी । पण वैरी सज्जनता अर गुणां री खसबू हाल तांई कायम री कायम है ।

## पंखैवालों

पंखैवालों सूं जूनै सनै सू म्हारी गळी में आया करतो ही ।

ओ कूण ही, फ्यों आवती ही, इण री एक कथा है । जिकै री संबंध इतिहास सूं है ।

कैयै है कै एक वार बादसा औरंगजेब मन में इसी धारी कै सगळों रजपूत राजायां नै मुसळमान बणाय दिया जाय । तौ पछै बांरी पिरजा सोरी-सोरी मुसळमान बण जासी ।

एक खड़जंतर रचियौ गयौ । सगळों राजायां, अमीर-उमरावां नै, बादसा अटक नदी रै पार आवण री हुकम भेज दियौ । उठै छानी-मानी इसी जड़ाजंत तजवीज जचाय राखी ही कै सगळों नै सागै ई मुसळमान बणाय दिया जावै ।

इण गुप्त भेद री ठा पड़गी एक जीवणसा फकीर नै ।

अटक नदी रै कांठै राजा लोग सुख सूं बैठा गुलद्वारा उडाय रया हा । हा-हा-फी-फी हुय रयी ही ही ।

जीवणसा फकीर काळी कांबळ ओढ़ियोड़ी छानी-लुकतो बठै आयौ अर सगळों नै सावचेत कर'र कैयौ-ये तौ अठै गाफल बैठा ही । काल थानै अटक नदी पार करनी है । थारै वै पार पूगतां ई बादसा सलामत थां सगळों नै एक सागै ई मुसळमान बणाय देसी । हूं थानै सावचेत करण नै आयौ हूं । संभळी-संभौ अर इण आफत सूं बंचण री वैगी उपाव काढ़ी ।

फकीर तौ कैय'र फरै । सगळों रा चैरा फक्क । टुगटुग एक बीजै री मूंडी जोवै । गळै-घांटै नहीं आवै । कूण पाड़ सूं माथौ टकरावै ? कूण काळै नै धूड़ वावै ? कूण चलाय'र भीत नै तेड़ी जावै ? कूण बिन आई मरै ! कूण स्याम सूं संप्राम मांडै ।

जहाँ बीकानेर नरेस श्री करणसिंहजी नै इस्ट देवता री प्रेरणा हुई । बोलिया-मनै एक उपाय उखतियो है । इयां करौ । बादसा री परघै नै कैवौ-पैला राजा लोग बै पार जासी । आ घात वे मरियां ई को मानैनी । बां री सान ओझी को हुय जावैनी ? वे आपां सूं पैला बयोर हुय जासी । बानै पूगाय'र जद नावां आपांनै लेवण नै पाछी आवै तद बांरा दुकडा उडाय दौ । पाछा दुर पड़ी आपां रै देस । कद नथी नांवा बणै अर कद वैपारवाळा, पाछा आवै ? जित्तै देख दाता है, फेर कई सोचसां ।

बात तौ सगळां रै हाडो-हाड धैठगी । पण आगीवान बणै कूण ? जद श्री करणसिंहजी हांकारौ भरियो ।

धूड़ री तखत बणियो । सगठे राजा मिसल-सर ऊभा । बानै बादसा थरपिया । जोर-जोर सूं बां री जै बोलाई । अर बानै 'जय जंगल घर बादसा, री पदवी देय'र बांरी पूजन, सनमान कियो ।

पण जीवणसा फकीर रै उपगार री वदळी चूकावणौ हाल बाकी ई रैयग्यौ । जणै सगळां मिल'र रजवाडां में घर-घर सूं एक-एक पइसौ उधरावण रौ वैनै पट्टी लिख दियो ।

उणी जीवण सा फकीर रै परवारवाळा राजावां रै वखत तांई धरावर उधराई करता हा । आपरै खनै मोरपांख रौ पंखौ राखण सूं 'पंखवाळा' कैवाया ।

तौ म्हांरी गळी में फकीर अबदुल-रैमान सा आया करता । अरबी-फारसी रा वे आळा विदवान हा । बिचलौ खामणौ, भारी सरीर, बडी बडी आंख्यां, जाडा भंवारा, मैदी सूं रंगियोडा केस अर दाड़ी, कमेज पैरियोडो, तैमल बांधियोड़ी, माथै मलागिरी फेंटी, पगां में पंजाबी पगरखी, एक हाथ में पंखौ अर बीजै में छड़ी । घर सामै ऊभ'र करारी घोरदार आवाज लगांवता—हरदम चेत, लात्रौ माई एक पैसा ।' गळीवाळा, बांरी घणौ आदर करता । दावर बानै देखण नै भेळा हुय जांवता । कई घरां तांई बां रै सागै-सागै जांवता । लारै सूं बांरी नकल कदांवता ।

लारलै दिनां में, साजी रै गलै में खराबी हुयगी ही । बोली बैठगी ।  
धाघी पड़गी ही ।

साजी नै कोई पइसौ नहीं देंवतो तो वे दावौ कर'र ले सकता हान । एक  
वार इसी ई वारदात सायत चूरू या रतनगढ़ में हुई ही, इसी सुणनै में  
आई है ।

पछै इण रै बदलै में राज सू' १००) महीनौ साजी रौ बंध ग्यौ हौ ।

मोकळा वरस इयै घात नै हुयग्या पण हाल ताई साजी नै लोग  
भूलिया फोयनी ।





